C-1

Childhood and Growing Up

बचपन और विकास

Unit-1	
शिक्षार्थी : बचपन और विकास	**Learner : Childhood and development**
• बचपन की अवधारणा : ऐतिहासिक व समकालीन परिप्रेक्ष्य; प्रमुख विमर्श • बचपन के दौरान प्रमुख कारक : परिवार, पड़ोस, समुदाय और विद्यालय • बच्चे, बचपन और उनका विकास : समकालीन वास्तविकता, बिहार के विशेष संदर्भ में	• Concept of Childhood : Historical and contemporary perspectives; major discourse • Key Factors during Childhood: Family, Neighborhood, Community and School • Children, Childhood and their development: The Contemporary realities with special focus on Bihar

बच्चे तथा बचपन की संकल्पना काल व स्थान के अनुसार सदैव बदलती रही है। अतः ऐतिहासिक विकास की मोटी–मोटी समझ से इस इकाई की शुरुआत करना उपयुक्त होगा। ऐतिहासिक विकास के अंतर्गत बच्चों और बचपन को लेकर अलग–अलग काल व समाज में बनी धारणाओं की चर्चा की जाएगी। बचपन को प्रभावित करनेवाले कारकों की चर्चा के साथ–साथ उनके द्वारा बच्चे पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी संक्षिप्त चर्चा यहां होगी। विकास के मामले में भी बच्चे का बचपन बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए बचपन की संकल्पना के साथ–साथ बच्चों के विकासात्मक पक्ष की चर्चा भी करनी होगी, लेकिन यहां पर विकास के आयामों को बचपन पर ही केन्द्रित रखा जाएगा, उससे आगे की चर्चा आगे की इकाइयों में की जाएगी।

Unit-2	
मानव विकास की समझ	**Understanding Human Development**
• मानव विकास में प्रमुख अवधारणाएं : वृद्धि, परिपक्वता एवं विकास की अवधारणा; वृद्धि रेखा तथा मानव विकास के संदर्भ में इसकी उपयोगिता; विकास के बुनियादी सिद्धांत • शिक्षार्थी का विकास : शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, भावात्मक, सामाजिक व नैतिक; इनके बीच का अंर्तसम्बंध और शैक्षिक निहितार्थ (पियाजे, इरिक्सन, कोह्लबर्ग और गिलिगन के सिद्धांतों के विशेष संदर्भ में)	• Major Concept in Human Development: Growth, Maturation and Development; Growth Curve and its utility in the context of Human Development; Basic Principles of Development • Development of learner: physical, cognitive, language, emotional, social and moral; their interrelationships and implications for teachers (special reference to theories given by Piaget, Erikson, Kohlberg and Giligan).

मानव के विकास के संदर्भ में कई अवधारणाएं निरन्तर आती रही है, जिसमें बचपन से लेकर बुढ़ापे तक के जीवन विकास को समझा जाता रहा है। इस इकाई का जोर मानव विकास के कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं को समझने पर है जिससे बच्चों व किशोरों के विकास को लेकर शिक्षकों की विस्तृत समझ बन सके। यहां मानव विकास से सम्बंधित कुछ विवादित मुद्दों की भी चर्चा की गयी है जिसके प्रति सुविज्ञ दृष्टिकोण विकसित किया जाएगा। इकाई के तीसरे बिन्दु के अंतर्गत, कुछ प्रमुख सिद्धांतों की विशेष चर्चा करते हुए शिक्षार्थी के विकास के शारीरिक, भाषायी, भावात्मक, सामाजिक व नैतिक विकास को समझने की कोशिश की गयी है।

Unit-3	
किशोरावस्था में शिक्षार्थी	**Learner in Adolescence**
• किशोरावस्था की अवधारणा : रूढ़िगत मान्यताएं, सही समझ की जरूरत, प्रमुख मुद्दे और कारक • किशोरावस्था को विशेष ध्यान में रखते हुए विकास की अवस्थाओं एवं उनकी विशेषताओं की समझ • किशोरावस्था में शिक्षार्थियों की गतिविधियां, आकांक्षाएं, द्वंद एवं चुनौतियां, और उनसे बर्ताव करने के तरीके	• Concept of Adolescence: stereotypes, need of right understanding, major issues and factors • Understanding stages of development and their characteristics with special emphasis on adolescence • Activities, aspirations, conflicts and challenges of an adolescent learner and ways to deal with them.

Scanned with CamScanner

बी.एड. करनेवाले प्रशिक्षुओं को माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से 12) की कक्षाओं में शिक्षण करना होता है जिसमें मूलतः किशोरावस्था में बच्चे होते हैं। अतः इस इकाई में किशोरावस्था की विस्तृत समझ अर्थात विकास की अवस्थाएं, उनकी विशेषताएं एवं चुनौतियां, आदि पर चर्चा की जाएगी जिससे कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के मन एवं व्यवहार दोनों को समझते हुए अपने शिक्षण को कर पाएं। यहां भी यह बात लागू होती है कि किशोरावस्था भी कोई एक निश्चित संकल्पना नहीं है। समाज, जगह और संदर्भ के अनुसार, इसके प्रति सोंच में कई अंतर है, इसलिए इसकी समझ बनाते हुए बिहार में किशोर–किशोरियों की स्थिति का विश्लेषण भी इस इकाई में किया जाएगा। किसी भी व्यक्ति के जीवन में किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण काल होता है जिसमें वह अपने विकास के कई नये पहलुओं से परिचित होता है और उनसे अंतःक्रिया के माध्यम से व्यक्ति की जो सोंच बनती है वह उसके आगे के जीवन को आकार देती है। अतः समाज में किशोर–किशोरियों के साथ कैसा बर्ताव किया जाए, यह एक अहम मुद्दा है क्योंकि उसी बर्ताव पर उसके जीवन की आगे का निर्णय टिका होता है। इन बातों को ध्यान में रखकर इस इकाई में किशोरों के संदर्भ में शिक्षा कैसी हो, तथा उसमें सबकी क्या भूमिका होनी चाहिए, इस पर विमर्श को प्रस्तुत किया जाना है। यह इकाई एक प्रकार से कई नयी संकल्पनाओं से परिचय कराती है।

Unit-4	
समाजीकरण और शिक्षार्थी का संदर्भ	**Socialization and the Context of Learner**
• समाजीकरण की अवधारणा : प्रमुख विमर्श, इसके माध्यम के रूप में शिक्षा तथा प्रमुख कारक • समाजीकरण की संस्थाएं एवं उनकी भूमिका : परिवार, समुदाय, विद्यालय, मित्रमंडली, शिक्षक, मीडिया, बाजार, अन्य औपचारिक व अनौपचारिक संस्थाएं; सामाजिक संस्थाएं जैसे संस्कृति, वर्ग, जाति, जेण्डर आदि • समाजीकरण की प्रक्रिया और सामाजिक वास्तविकताएं : असमानता, और इनका बच्चों व किशोरों पर पड़ता प्रभाव	• Concept of Socialization: major perspectives, education as a medium and key factors • Institutions of Socialization and their role: The context of family, community, school, peers, teacher, media, market, other formal and informal organizations; social institutions such as culture, class, caste, etc. • Process of Socialization and social realities (with special focus on Bihar): Inequalities, and their impact on learner

चाहे बचपन हो या किशोरावस्था या आगे का विकास, इन सब के दौरान समाजीकरण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है लेकिन इस प्रक्रिया के प्रकृति में कई परिवर्तन होते रहते हैं। अतः इस इकाई में समाजीकरण की प्रक्रिया के जटिल संरचना एवं उसके कारकों की विस्तृत चर्चा करनी है। समाजीकरण के प्रमुख परिप्रेक्ष्यों में मूलतः प्रकार्यात्मक और आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्यों को समझा जाएगा। समाजीकरण को लेकर एक सैद्धांतिक समझ भी बने, इसके लिए ब्रोनफ्रेनब्रेनर के मॉडल की चर्चा की गयी है जो बच्चे के परिवेश के कारकों, उनकी स्थिति एवं प्रभाव की उपयोगी समझ प्रस्तुत करता है। यह इकाई समाजीकरण से जुड़े अन्य अवधारणाओं की भी समझ देगा। अतः अन्य अवधारणाओं की बात तो यहां होगी लेकिन केवल समाजीकरण से जोड़कर और उसमें शिक्षा की भूमिका को रेखांकित करते हुए। समाजीकरण की संस्थाएं मूर्त भी हैं और अमूर्त भी, अतः दोनों की समेकित समझ इसमें प्रस्तुत की जाएगी। किसी व्यक्ति की सामाजिक अस्मिता को समाजीकरण की संस्थाएं किस प्रकार निर्मित करती हैं, उसकी संक्षिप्त समझ भी यहां प्राप्त की जाएगी।

Unit-5	
शिक्षार्थियों में विविधता की समझ	**Understanding diversity in learners**
• मानवीय विविधता की प्रकृति एवं अवधारणाः सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता; • मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के आधार पर भिन्नताओं के आयाम : बौद्धिकता, क्षमता, अभिरूचि, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता, व्यक्तित्व • विविध संदर्भों के शिक्षार्थियों की समझ : सामाजिक, सांस्कृतिक, समुदाय, धर्म, जाति, वर्ग, जेण्डर, भाषा और भौगोलिक स्थिति, मीडिया, बाजार, तकनीक व वैश्वीकरण • विद्यालय में विविधता की समझ	• Nature and Concept of Human Diversity: Social and Cultural Diversity; • Dimensions of differences: intelligence, abilities, interest, aptitude, creativity, personality • Understanding children and adolescents from diverse contexts: social, cultural, community, religion, caste, class, gender, linguistic and geographic location, media, market, technic and universal • Understanding Diversity in School

विद्यालय इस बात की अक्सर अनदेखी करता रहता है कि वहां आनेवाले बच्चे अलग–अलग पृष्ठभूमि से आते हैं और सभी बच्चों का सीखने का अपना अलग तरीका हो सकता है। तभी, किसी भी विद्यालय के कोई भी विद्यार्थी एक दूसरे के समान नहीं होते हैं, सबमें भिन्न–भिन्न अभिरूचियां, क्षमताएं एवं सोंच होती है। अतः शिक्षक को शिक्षार्थियों की विभिन्नताओं को पहचानने और उसके अनुरूप काम करने की समझ जरूर होनी चाहिए। इस इकाई में शिक्षार्थियों की कुछ बुनियादी विभिन्नताओं की चर्चा की गई है। इकाई के विभिन्न विषय वस्तुओं के अंतर्गत कुछ तकनीकी शब्दों का प्रयोग भी किया गया है जिनके प्रति जागरूकता कम और भ्रांतियां ज्यादा है। यह इकाई उनको स्पष्ट करने का प्रयास करेगी। साथ ही, शिक्षार्थियों की विभिन्नताओं को केवल समझना ही जरूरी नहीं है बल्कि उनके प्रति विद्यालय, समाज और शिक्षक क्या नजरिया अपनाता है, इसका विश्लेषण करना तथा आवश्यकतानुरूप उसमें सुधार लाने के प्रति संवेदनशीलता महत्वपूर्ण है जिसपर यह इकाई केन्द्रित है।

Scanned with CamScanner

Suggested readings:

- Aries, Philip (1962). Centuries of Childhood. New York: Vintage Books publications.
- Berk, L. E. (2011).*Child Development*. (8th ed.). New Delhi: Pearson Prentice Hall.
- Berk, Laura E. (2006). Child Development. New Delhi: Printice Hall of India Pvt. Ltd.
- Chand Kiran (2012), Shiksha Ka Samajik Paripreshya, New Delhi, Delhi Vishwavidhyala.
- Kumar, Krishna (1993), Raj Samaj Aur Shiksha. New Delhi: Raj Kamal Prakahsan.
- Kumar, Krishna. Bachpan ki avdharna aur Baal Sahitya. Shaikshanik Sandarbh, Issue-24.
- Mishra, A. (2007). Everyday life in a slum in Delhi. In D. K. Behera (Ed.), Childhoods in South Asia. New Delhi: Pearson Education India.
- Monstessori, Maria (1995). Secret of Childhood. Hyderabad: Orient Longman.
- NCERT. (2006a). Position paper-National focus group on education with special needs (NCF 2005). New Delhi: NCERT.
- NCERT. (2006c). Position paper-National focus group on problems of scheduled caste and scheduled tribe children (NCF 2005). New Delhi: NCERT.
- Parekh, B. C. (2000). Rethinking Multiculturalism: Cultural diversity and political theory (pp. 213-230). Palgrave.
- Pathak, A. (2013). Social Implications of schooling: Knowledge, pedagogy and consciousness. Aakar Books.
- Piaget, J. (1926). *Language and Thought of the Child*. London: Routledge & Kegan Paul.
- Piaget, J. (1951). *The Psychology of Intelligence*. London: Routledge & Kegan Paul.
- Piaget, J. (1952). *The Origins of Intelligence in Children*. New York: International University Press.
- Ranganathan.N. (2000).*The Primary School Child: Development and Education*. New Delhi : Orient Longman
- Rogoff, B., Baker-Sennett, J., Lacasa, P., & Goldsmith, D. (1995). Development through participation in sociocultural activity. New Directions for Child and Adolescent Development, 1995(67), 45-65.
- Santrock, J.W. (2010). *Lifespan Development*. (13th ed.). New York: McGraw-Hill Higher education
- Sarasati, T.S. (1999). Culture, Socialization and Human Development. New Delhi: Sage.
- Saraswathi, T.S. (1999). Adult-child continuity in India: Is adolescence a myth or an emerging reality? In T.S. Saraswathi (Ed.), Culture, socialization and human development: Theory, research and applications in India. New Delhi: Sage.
- Saraswathi, T.S. (Ed). (1999). *Culture, Socialisation and Human Development: Theory, Research and Application in India*. New Delhi: Sage.
- Sharma, N. (2003). Understanding adolescence. NBT India.
- Steams, Peter N. (2006). Childhood in World History, New York: Routledge.
- Sternberg, R.J. (2013). Intelligence, competence, and expertise. In A. J. Elliot & C. S. Dweck (Eds.), Handbook of competence and motivation (pp. 15–30). Guilford Publications.
- Students of Barbiana School (1970). Letter to a teacher.
- Woolfolk, A. (2014). *Educational Psychology*. (12th ed.). New Delhi: Pearson Education.
- Woolfolk, A., Misra, G. &Jha, A.K. (2012).*Fundamentals of Educational Psychology*. (11th ed.). New Delhi: Pearson.

Scanned with CamScanner

C-2

Contemporary India and Education

समकालीन भारत और शिक्षा

Unit-1	
भारत में शिक्षा : अतीत से वर्तमान तक	**Education in India: From Past to Present**
• वैदिक कालीन एवं बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था पर चिंतन–मनन, गुण–दोष तथा प्राचीन शिक्षा केन्द्र • मध्यकाल में शिक्षा : मकतब, मदरसा व संस्कृत शिक्षा • अठारहवीं शताब्दी के दौरान की देशज शिक्षा व्यवस्था	• Reflecting on Education during Vedic & Buddhist Period, ancient education institutions • Education during medieval period: Maktab, Madarsa and Sanskrit Education • Indigenous System of Education during eighteenth century

आज भारत में जिस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था है वह केवल वर्तमान की देन नहीं है बल्कि उसका अपना अतीत भी है जिसको जानने से एक प्रशिक्षु के समझ के दायरे का विस्तार होगा। अपने अतीत की शिक्षा को समझना इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उससे शिक्षा के समृद्ध संस्कृति का भी बोध होता है और शिक्षा के ऐतिहासिक महत्व का भी ज्ञान होता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए इस इकाई में यह कोशिश की गई है कि प्रशिक्षुओं को भारत के शैक्षिक इतिहास के व्यापक स्वरूप से विश्लेषणात्मक परिचय कराया जाए। इस दिशा में, सिर्फ औपनिवेशिक ही नहीं बल्कि उससे पहले के कालों के संदर्भ में भी शिक्षा को समझने का प्रयास है। शिक्षा के इतिहास को यहां हड़प्पा सभ्यता से शुरु किया जा रहा है जो कि स्वयं में शिक्षा के प्रचलित इतिहास में एक नया पन्ना जोड़ने जैसा है। हालांकि इसके अति प्राचीन होने के कारण उपलब्ध साक्ष्यों एवं अनुमानों के आधार पर ही संक्षिप्त विश्लेषण किया जाएगा लेकिन वह विश्लेषण हमारे शिक्षायी चिंतन के प्रस्थान बिन्दु को समझने के लिए अहम है। प्राचीन शैक्षिक व्यवस्था को समझने के लिए वैदिक, बौद्ध की शिक्षा पर भी चर्चा की जाएगी। हमारे इतिहास में कई शैक्षिक संस्थाओं व व्यवस्थाओं की भी उत्पति हुई है उनका भी संक्षिप्त परिचय इस इकाई से प्राप्त होगा। इस इकाई मे देशज शैक्षिक व्यवस्था पर विशेष बात की जाएगी। साथ ही, औपनिवेशिक काल के उन तमाम शैक्षिक प्रयासों की भी चर्चा की जाएगी जिसका असर आज की शिक्षा व्यवस्था में ही व्याप्त है।

Unit-2	
ब्रिटिश तथा स्वतंत्रता पश्चात शिक्षा	**British & after independence Education**
• ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान उभर कर आयी शिक्षा व्यवस्था : मिशनरी स्कूल, ब्रिटिश राज के अंतर्गत गठित औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था; भारतीयों द्वारा गठित शैक्षिक संस्थाएं एवं आंदोलन (जैसे कि यंग बंगाल आंदोलन, देवबंद, आर्यसमाज, अलीगढ़, सत्यशोधक समाज, जामिया स्कूल, बुनियादी शिक्षा) • स्वतंत्रता पश्चात, भारत में शिक्षा का विकास – प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की समस्याएँ • बिहार में शिक्षा का ऐतिहासिक विकास–सभी के लिए शिक्षा व्यवस्था, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएँ	• Missionaries, Formal education system under British administration, Different Education systems or movements founded by Indians (i.e. Young Bengal Movement, Deoband, Aryasamaj, Aligarh, Satya Shodhak Samaj, Jamia school, Basic education) • Post-Independence development of Education System in India- Primary, Secondary & Higher Education & its Problems • Historical development of Education in Bihar, Education system for all, Teachers training Institutions.

इस इकाई में ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान उभर कर आई शिक्षा व्यवस्था पर गहन चिंतन एवं मनन किया जाएगा और साथ ही गठित शैक्षणिक संस्थाएं एवं आंदोलनों की विस्तृत चर्चा की जाएगी इसके साथ–साथ स्वतंत्रता पश्चात के शैक्षिक विकास की चर्चा में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की समस्याओं को भी दृष्टिगत रखते हुए विस्तार से चर्चा की जाएगी जिसमें बिहार के शैक्षिक विकास, शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं का विशेष उल्लेख किया जाएगा।

Scanned with CamScanner

Unit-3

शिक्षा की समझ	Understanding Education
• शिक्षा : महत्व एवं प्रकृति; 'शिक्षित व्यक्ति कौन है' इसका विश्लेषणात्मक समझ • भारतीय चिंतकों के शिक्षासम्बंधी विचारों का विश्लेषणात्मक समझ : सैयद अहमद खां, ज्योतिबा फुले, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्दो, पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ. जाकिर हुसैन, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ. एस. राधाकृष्णन, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, जे. कृष्णमूर्ति • पाश्चात्य चिंतकों के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक समझ : प्लेटो, रूसो, जॉन डीवी, पॉलो फ्रेरे • गांधी के 'हिन्द स्वराज' और टैगोर के 'शिक्षा' के माध्यम से शिक्षा की समझ	• Education: need and nature; analytical understanding of the notion of an educated person Analyzing the thoughts of various Indian thinkers: Sir • Syed Ahmed Khan, Jyotiba Phule, Swami Vivekananda, Sri Aurobindo, Pandit Madan Mohan Malviya, Dr. Zakir Husain, Maulana Abul Kalam Azad, Dr. S. Radhakrishnan, Dr. B.R. Ambedkar and J. Krishnamurti • Analyzing the thoughts of various western thinkers: Plato, Rousseau, John Dewey, Paulo Freire Understanding of Education through 'Hind *Swaraj*' by Gandhi and '*Shiksha*' by Rabindranath Tagore

शिक्षा की प्रकृति क्या हो, यह क्यों महत्वपूर्ण है तथा 'शिक्षित व्यक्ति कौन है' इन तीनों सवालों का जवाब काल और संदर्भ के अनुसार सदैव बदलता रहा है और आगे भी बदलता रहेगा, लेकिन अमूमन हम इनके उत्तरों को शाश्वत मानते है। इसीलिए इस इकाई की शुरूआत में शिक्षा की बदलती प्रकृति जिसमें औपचारिक–अनौपचारिक–निरौपचारिक, पारम्परिक–नवाचारी आदि के महत्व तथा 'शिक्षित' होने के मायने पर विमर्श किया जाएगा। आगे उसी विमर्श को बढ़ाने के लिए तमाम भारतीय चिंतकों के विचारों का विश्लेषण भी इसमें किया जाएगा। इसके अंतर्गत सर सैयद अहमद खां, ज्योतिबा फूले, पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ. जाकिर हुसैन, जे. कृष्णमूर्ति ऐसे विचारक हुए जिन्होंने अपने द्वारा स्थापित संस्थानों के माध्यम से शिक्षा को एक अलग नजरिए से देखने की कोशिश की। उन संस्थानों में उन्होंने 'शिक्षा क्या, क्यों और कैसे' पर सम्पूर्ण विमर्श किया। साथ ही, मौलाना अबुल कलाम आजाद जो स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री रहे तथा नए भारत के शिक्षा की कल्पना में भूमिका निभायी, डॉ. एस. राधाकृष्णन जो आजादी के बाद शिक्षा पर बने पहले आयोग के अध्यक्ष थे तथा भारतीय दर्शन के ज्ञाता थे इस नाते उन्होंने शिक्षा को एक अलग नजरिए से देखने की कोशिश की। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के शैक्षिक चिंतन का प्रभाव संविधान के प्रावधानों पर भी पड़ा है, इसलिए उससे रूबरू होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। यदि स्वामी विवेकानन्द और श्री अरबिन्दो की बात करें तो इन्होंने शिक्षा के भारतीय दर्शन को प्रस्तुत किया और इन्होंने भी अपने दर्शन पर आधारित शैक्षिक संस्थानों का निर्माण किया। यहां स्पष्ट करना है कि इस इकाई में इन सब चिंतकों के शिक्षा सम्बंधी चयनित विचारों को केवल प्रधान माना गया है न कि उनकी जीवनियों को। शिक्षा को लेकर कई महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य पाश्चात्य चिंतकों के माध्यम से भी दिया गया, अतः उनके विचारों को भी संक्षेप में यहां शामिल किया गया है। इकाई के अंत में गांधी द्वारा रचित 'हिन्द स्वराज' और टैगोर की कृति 'शिक्षा' के मौलिक अध्ययन के माध्यम से शिक्षा की प्रकृति को समझा जाना है। इन दोनो विचारकों की रचना को इसलिए अलग से लिया गया है क्योंकि इन्होंने भारत में शैक्षिक चिंतन को बहुत ही गहराई से प्रभावित किया है।

Unit-4

समकालीन भारतीय शिक्षा और इसके मुद्दे	Contemporary Indian Education and its concerns
• शिक्षा का सार्वभौमीकरण : शिक्षा का अधिकार तथा शिक्षा तक बच्चों की सार्वभौमिक पहुंच • शिक्षा में असमानता : सरकारी व प्राईवेट विद्यालयों का संदर्भ, विद्यालयों की शहरी व ग्रामीण अवस्थिति का प्रभाव; समाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक आयाम • राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय तनाव, अशांति, सामुदायिक द्वंद, सामाजिक अन्याय का शिक्षा पर पड़ते प्रभाव की समझ • समान विद्यालय प्रणाली की संकल्पना : सी.एस.एस. रिपोर्ट (बिहार सरकार) के विशेष संदर्भ में	• Universalisation of School Education: Right to Education and Universal Access to education • Inequality in schooling: Govt.-private schools, rural-urban schools; Social-cultural-economical aspects • Issues of National and International conflicts, unrest, social injustice, communal conflict • Idea of common school system: with special focus on CSS Report (Govt. of Bihar)

इस इकाई में में शिक्षा के उन मुद्दों की समझ बनायी जाएगी जिससे आज के शिक्षक जुझ रहे हैं। ये मुद्दे इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे शिक्षक के कार्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है। अतः ये मुद्दे क्यों आए, इनकी पृष्ठभूमि क्या है और इनके प्रति एक शिक्षक की क्या भूमिका है, इन सब बिन्दुओं की चर्चा पर ही इस इकाई को केन्द्रित रखा गया है। इनमें से कई मुद्दे ऐसे हैं जो शिक्षा के साकारात्मक पक्ष को दिखाते हैं तो कुछ ऐसे भी मुद्दे हैं जो हमारी शिक्षा व्यवस्था के कमजोरियों को उजागर करते हैं। हमारे देश के तमाम विद्यालयों के असल सच को भी इस इकाई में समझा जाएगा।

Scanned with CamScanner

Unit-5	
शैक्षिक नीतियों के आलोक में विद्यालय की समझ	Understanding School in relation to Education Policies
• विद्यालय का नाम एवं प्रकार : नीतिगत परिप्रेक्ष्य के आलोक में विकास; भारत और विशेषरूप से बिहार में विद्यालयों की समकालीन संरचना को समझने के स्रोत के रूप में • विद्यालय की पाठ्यचर्या : नीतिगत परिप्रेक्ष्य के आलोक में विकास; विद्यालयी पाठ्यचर्या में समकालीन बदलावों की समझ, बिहार विशेष को ध्यान में रखते हुए • विद्यालय में मूल्यांकन व्यवस्था : प्रमुख बदलावों से सम्बंधित नीतिगत परिप्रेक्ष्य, बिहार के विद्यालयों में मूल्यांकन व्यवस्था का संदर्भ	• Name and types of the School: Development in the light Policy perspectives; As a source to understand the contemporary structure of schools in India as well as Bihar • Curriculum of the School: Major developments with reference to Policy perspectives; Understanding the development of the contemporary curriculum changes of schools with special focus on Bihar • Evaluation system in a school: Policy perspectives about major changes; the Context of Evaluation system in schools of Bihar

इस इकाई का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को विद्यालय के विभिन्न आयामों का विश्लेषण इस प्रकार करने का अवसर प्रदान करना है जिससे उन्हें देश की प्रमुख शिक्षा नीतियों तथा उनके विकास क्रम का ज्ञान अपनी संस्था के संदर्भ में मिल सके। आमतौर पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में 'शिक्षा का इतिहास' एक शुष्क विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। इसमें शिक्षा से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों को प्रमुखता से चिन्हित किया जाता है, परन्तु ये तथ्य किसी संदर्भ से नहीं जुड़ पाते और इस कारण देश की शिक्षा नीतियों को लेकर एक विहंगम तथा संवेदित दृष्टि का विकास करने में असमर्थ रहते हैं। एक अन्य आम प्रवृति देश की शैक्षिक नीतियों को सिर्फ उनकी प्रमुख संस्तुतियों के दर्पण में देखने की है। किसी भी शिक्षा नीति के बनाये जाने की प्रक्रिया में उस समय की आवश्यकताएँ तथा बाध्यताओं को भी जानना महत्त्वपूर्ण है। एक शिक्षा नीति से दूसरी शिक्षा नीति का सफर उपलब्धियों और अधूरे रह गये लक्ष्यों की मिली–जुली कथा कहता है। अतः शिक्षा नीतियों को किस रीति से पढ़ाया जाए, यह महत्त्वपूर्ण है। यह इकाई इस बात का प्रयास करती है कि प्रशिक्षु किसी एक विद्यालय को आधार बनाकर शिक्षा नीतियों एवं आयोगों की अनुशंसाओं को लागू किये जाने में निहित चुनौतियों को समझ सकें। किसी विद्यालय का नाम, उसकी स्थापना से लेकर आज तक में किये गये परिवर्तन स्वयं में शिक्षा नीति के विकास क्रम का संकेत होते हैं। विद्यालय का भवन स्वयं में विद्यालय के विकास की कहानी समेटे रहता है। विद्यालय में पढ़ाए जा रहे विषयों का समूहीकरण अथवा विभाजन किस पाठ्यचर्या के आधारों पर किया गया है, इसे नीतियों के आलोक में जानना चाहिए। साथ ही, विद्यालय में होनेवाली मूल्यांकन व्यवस्था का क्या इतिहास रहा है, इन सबकी समझ से प्रशिक्षु विभिन्न शैक्षिक नीतियों को विद्यालय के भीतर समझ पाने में सक्षम हो सकेंगे। उपरोक्त बिन्दुओं को बिहार के संदर्भ में भी विशेष रूप से समझा जाएगा।

Suggested readings:

- Aggrawal, J.C. (1966). Progress of Education in Free India, New Delhi: Arya Book Depot.,1966.
- Balagopalan, S. (2003). Understanding educational innovation in India: the case of Ekalavya.*Education Dialogue 1(1): 97-121.*
- Booth, T., Ainscow, M., Black-Hawkins, K., Vaughan, M., & Shaw, L. (2000). Index for inclusion: Developing learning and participation in schools. Centre for Studies on Inclusive Education.
- Carini, P.F. (2001). Valuing the immeasurable. In Starting strong: A different look at children, schools, and standards (pp. 165–181). New York: Teachers College Press.
- Chandra, B. (2004) Gandhiji, Secularism and Communalism.*Social Scientist, Vol. 32, No. 1/2pp. 3-29*
- De, A., Khera, R., Samson, M., & Shiva Kumar, A.K. (2011). PROBE revisited: A report on elementary education in India. New Delhi: Oxford University Press.
- Ghosh, S.C. (2007). History of education in India. Rawat Publications.
- GOI. (1966). Report of the education commission: Education and national development. New Delhi: Ministry of Education.
- GOI. (1986). National policy of education. GOI.
- GOI. (1992, 1998). National policy on education, 1986 (As modified in 1992). Retrieved from http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NPE86-mod92.pdf

Scanned with CamScanner

- GOI. (2009). The right of children to free and compulsory education act, 2009. Retrieved from http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/rte.pdf
- GOI. (2011). Sarva shiksha abhiyan- Framework for implementation based on the right of children to free and compulsory education act, 2009. GOI.
- Govinda, R. (2011). Who goes to school?: Exploring exclusion in Indian education. Oxford University Press.
- Govinda, R. (ed). (2002). *India education report: a profile of basic education*. New Delhi: Oxford University Press.
- Kabir, H. (1982). Education in New India. London: George Allen an Unwin
- Leslie C. Soodak. Classroom Management in Inclusive Settings. *Theory into Practice* Vol. 42, No. 4, Classroom Management in a Diverse Society (Autumn, 2003), pp. 327-333
- Mishra, A. K. and Gupta, Ruchika (2006). Disability Index: A Measure of Deprivation among Disabled. *Economic and Political Weekly*. Vol. 41, No. 38 (Sep. 23-29, 2006), pp. 4026-4029
- Mookerjee, R.K. (1960). Ancient Indian Education, Delhi; Moti Mahal.
- Mukherjee, S.N. (1955). History of Education in India, Baroda: Acharya Book Depot.
- Naik, J.P. (1979) *Education Commission and After.* A P H Publishing Corporation: New Delhi. Also available in Hindi
- Naik, J.P. (1982). The education commission and after. New Delhi: APH Publishing.
- Nambissan, G. B. (2009). *Exclusion and discrimination in schools: Experiences of dalit children*. Indian Institute of Dalit Studies and UNICEF.
- NCERT (2006/7) *National Focus Group Paper on the Problems of Scheduled Castes and Scheduled Tribes; National Focus Group Paper on Gender*. New Delhi: NCERT
- NCERT. (2005). National curriculum framework. NCERT.
- NCERT. (2006c). Position paper-National focus group on problems of scheduled caste and scheduled tribe children (NCF 2005). New Delhi: NCERT.
- NCTE (2009) *National Curriculum Framework for Teacher Education*. New Delhi
- Nurullaha & Naik, History of Indian Education, Bombay; Macmillan & Co.
- Pathak, A. (2013). *Social implications of schooling: Knowledge, pedagogy and consciousness*. Aakar Books.
- PROBE (1999) *Public report on basic education in India*. New Delhi: Oxford University Press.
- Raina, V. (2010). FAQs on the right to free and compulsory education act 2009. Bharat Gyan Vigyan Samiti, UNICEF.
- Rampal, A. & Mander, H. (2013, July. 13). Lessons on food and hunger: Pedagogy of empathy for democracy. *Economic and Political Weekly 48*(28), 50-57.
- Saxena, S. (2012, Dec. 8). Is equality an outdated concern in education? *Political and Economic Weekly 47*(49), 61-68.
- Singal, Nidhi. An ecosystemic approach for understanding inclusive education: An Indian case study.
- The PROBE Team. (1999). Public report on basic education in India. Delhi: Oxford University Press.
- Todd Lekan. Disabilities and Educational Opportunity: A Deweyan Approach Transactions of the Charles S. Peirce Society. Vol. 45, No. 2 (Spring 2009) (pp. 214-230)
- UNESCO. (2006). United Nations convention on the rights of persons with disabilities. UNESCO.
- UNESCO. (2009). Policy guidelines on inclusion in education. UNESCO.
- Zastoupil, L., & Moir, M. (1999). The great Indian education debate: Documents relating to the Orientalist-Anglicist controversy, 1781-1843. Psychology Press.

Scanned with CamScanner

C-3

Learning and Teaching

सीखना और सिखाना

Unit-1	
अधिगम से सम्बन्धित अवधारणाएँ	**Concepts related to Learning**
• अधिगम/सीखना : विभिन्न विचारों से परिचय • अधिगम को प्रभावित करनेवाले प्रमुख कारक • सीखने में एकाग्रता की भूमिका एवं इसका संवर्धन • अंतर्सम्बंधों की विश्लेषणात्मक समझ : अधिगम और विकास, अधिगम और अभिप्रेरणा, अधिगम और बुद्धि	• Learning: Introduction to multiple views • Major factors affecting learning • Role of concentration in learning and its enhancement • Analytical understanding of relations: Learning and Development; Learning and Motivation; Learning and Intelligence

अधिगम या सीखने को किसी एक ढंग से परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसके विषय में अलग–अलग समाज एवं संस्कृतियों में भिन्न–भिन्न मान्यताएं हैं जो लोकसंस्कृतियों, लोकोक्तियों, रीति–रिवाज, संस्कार या फिर सामाजिक परम्पराओं के रूप में वहां विद्यमान हैं। इस विषय में, अलग–अलग व्यक्तियों की भी अपनी–अपनी मान्यताएं हो सकती हैं जैसे कि शिक्षार्थी, अध्यापक, अभिभावक, आदि। अतः इस इकाई की शुरूआत अधिगम से सम्बंधित उन सामान्य प्रचलित मान्यताओं को जानने से की जाएगी। उन मान्यताओं का कुछ हद तक विश्लेषण भी किया जाएगा। लेकिन उनके पूर्ण विश्लेषण के लिए कुछ सैद्धांतिक आधारों की जरूरत होगी जिनकी चर्चा अगली इकाई में है। इसलिए इस इकाई में उनका सामान्य सा विश्लेषण ही होगा। इस इकाई में अधिगम को प्रभावित करनेवाले कारक यथा व्यक्तिगत, सामाजिक, संस्थागत, मूर्त व अमूर्त आदि की भी सामान्य समझ प्राप्त की जाएगी। यहां एक महत्वपूर्ण कारक 'एकाग्रता' की विशेष चर्चा की जाएगी क्योंकि भारतीय देशज परम्परा में इस कारक को विशेष स्थान दिया जाता रहा है। साथ ही इस इकाई में अधिगम से सम्बंधित अन्य अवधारणाओं की भी बात की जाएगी। अधिगम की प्रक्रिया का विकास, अभिप्रेरणा और बुद्धि से क्या अंतर्सम्बंध है इसको विशेष रूप से इस इकाई में समझा जाएगा। अधिगम और विकास के अंतर्सम्बंध की मान्यताओं पर चर्चा, अभिप्रेरणा के सिद्धांत (आंतरिक व बाह्य अभिप्रेरणा, प्रक्रिया आदि) का विवरण और बुद्धि से सम्बंधित विकासात्मक सिद्धांतों (बिने, गिलफर्ड, गार्डनर) का विश्लेषण यहां किया जाएगा।

Unit-2	
अधिगम के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य	**Theoretical perspectives of Learning**
• अधिगम से सम्बंधित सिद्धांतों के विकास का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य • अधिगम से सम्बंधित सिद्धांतों की समझ : व्यवहारवादी, मानवतावादी, संज्ञानवादी, सूचना–प्रक्रियाकरण मत, सामाजिक–सर्जनवादी दृष्टिकोण	• Reflecting on the development of theories of learning: Historical perspective • Theories related to Learning: Behaviourist, Cognitivist, Information-processing view, Humanist, Social-constructivist

इस इकाई की शुरूआत अधिगम के सिद्धांतों के ऐतिहासिक विकास के संक्षिप्त परिचय से की जाएगी जिसमें मनोविज्ञान से अधिगम के सिद्धांतों के विशेष सम्बंध पर चर्चा की जाएगी। इसके बाद अधिगम से सम्बंधित विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक समझ प्रस्तुत की जाएगी। इस इकाई में दो बिन्दु ही लिये गये हैं क्योंकि दूसरा बिन्दु स्वयं में बहुत विस्तृत है जिसके अंतर्गत दिए गए विभिन्न सिद्धांतों की चर्चा की जाएगी। हालांकि अब तक यह देखा गया है कि उन सिद्धांतों को बहुत ही शुष्क रूप में ही प्रस्तुत किया जाता रहा है जिसमें उनसे सम्बंधित प्रयोगों का विवरण मात्र ही दिया जाता है जिससे प्रशिक्षुओं की 'सीखने' को लेकर कोई उपयोगी दृष्टिकोण नहीं बन पाता था। अतः विभिन्न सिद्धांतों की चर्चा को उपयोगी बनाने के लिए तीन निर्देशक बिन्दु भी निर्धारित कर दिया गया है। यदि सिद्धांतों की बात करें तो व्यवहारवादी में पैव्लव एवं स्कीनर, मानवतावादी में मैस्लो, संज्ञानवादी मे पियाजे, सूचना–प्रक्रियाकरण मत में एटकिंसन, सामाजिक–सर्जनवादी दृष्टिकोण में वाइगोत्सकी एवं बैण्डुरा जैसे मनोवैज्ञानिकों की विशेष चर्चा की जाएगी। अधिक जोर संज्ञानवाद और सामाजिक–सर्जनवाद के सिद्धांतों को विस्तार से समझने पर होगा।

Scanned with CamScanner

Unit-3	
अधिगम और शिक्षण	**Learning and Teaching**
• अधिगम–शिक्षण प्रक्रिया से संबंधित विविध दृष्टिकोणों की समझ : शिक्षक–केन्द्रित, विषय–केन्द्रित एवं बाल–केन्द्रित; 'ज्ञान के सम्प्रेषक', 'आदर्श', 'सुगमकर्ता' एवं 'सह–अधिगमकर्ता' के रूप में शिक्षक • शिक्षण के सामाजिक–सर्जनवादी परिप्रेक्ष्य एवं इसके निहितार्थों की समझ • सृजनात्मक अधिगम : अवधारणा एवं शिक्षणशास्त्रीय निहितार्थों की समझ • अधिगम–शिक्षण के लिए सुगम माहौल का निर्माण प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियां	• Understanding multiple views for learining-teaching process: teacher centric, subject centric and learner centric; Teacher as 'transmitter of knowledge', 'model', 'facilitator', 'co-learner' • Understaning Social-constructivist perspective of teaching and its implications • The idea of Creative Learning: Concept and its pedagogical implications • Creating facilitative learning-teaching environments: major points and concerns

इस इकाई में अधिगम और शिक्षण को एक साथ देखने पर बल दिया गया है। पिछली इकाई में अधिगम के सिद्धांतों की समझ पर जोर दिया गया था लेकिन उन सिद्धांतों की समझ तब तक उपयोगी नही है जब तक कि प्रशिक्षु द्वारा उनका कक्षायी माहौल में प्रयोग न किया जाए। यहां इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रशिक्षु अपने द्वारा सीखे गए शैक्षिक सिद्धांतों की उपयोगिता को स्वयं से परखकर देखें। कोई भी सिद्धांत शिक्षण में किस प्रकार से मददगार है इसकी गहन समझ प्रशिक्षुओं को अवश्य मिले। साथ ही, शिक्षण को लेकर जो विविध दृष्टिकोण दिए गए हैं, उनका सिद्धांतों से किस प्रकार जुड़ाव है, इसे भी यहां समझा जाएगा। आज के शैक्षिक विमर्श में सामाजिक–सर्जनवाद का विशेष महत्व है, इसलिए इसको विशेष तौर पर समझा जाएगा। अधिगम–शिक्षण के दौरान कक्षा में कई ऐसी घटनाएं घटती हैं जिनको शिक्षक समझ नहीं पाते हैं और उसकी अनदेखी कर देते हैं जैसे कि बच्चों की सृजनात्मक सोच एवं प्रतिभा। अतः इस इकाई में सृजनात्मकता को भी अधिगम–शिक्षण का अभिन्न अंग मानते हुए चर्चा की गयी है ताकि ऐसे बच्चे छूट न जाए। साथ ही, अधिगम–शिक्षक की चुनौतियों की सैद्धांतिक समझ भी इस इकाई में प्राप्त की जाएगी।

Unit-4	
कक्षायी प्रक्रियाएं एवं सीखने की योजना	**Classroom processes and Learning Plan**
• कक्षायी प्रक्रियाएं : प्रभावी कारक; प्रमुख चुनौतियां, समय प्रबंधन, शिक्षक का सम्प्रेषण कौशल, शिक्षार्थियों की भूमिका • विभिन्न कक्षायी गतिविधियों के अनुसार कक्षाकक्ष की बैठक व्यवस्था • कक्षायी गतिविधियों को पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र एवं शिक्षण संसाधनों के साथ जोड़ना • कक्षाकक्ष शिक्षण के संदर्भ में माइक्रो–टीचिंग और ब्लूम की टेक्सोनोमी का आलोचनात्मक समझ • 'सीखने की योजना' की अवधारणा को समझना : पारम्परिक पाठ योजना को बदलकर सीखने की योजना का प्रयोग	• Classroom processes: Factors affecting; major challenges; time management, Communication skills of teacher, role of learners • Seating arrangements for varfous classroom practices • Relating Classroom practices with Curriculum, pedagogy and teaching resources • Critical understanding of micro-teaching and Bloom's taxonomy for classroom practices • Understanding the concept of 'Learning plan': replacing the traditional lesson plan of classroom teaching

सीखने–सिखाने का कार्य कक्षाकक्ष की प्रक्रिया और शिक्षण योजनाओं से जुड़ी हुई है। अतः कक्षाकक्ष की अवधारणा तथा शिक्षण योजना के तौर पर 'सीखने की योजना–लर्निंग प्लान' की व्यापक समझ शिक्षक को होनी चाहिए। इस इकाई में सीखने के विभिन्न सिद्धांतों को कक्षाकक्ष तथा लर्निंग प्लान के निर्माण में किस प्रकार समावेशित करें, इसकी चर्चा की जाएगी।

Scanned with CamScanner

Unit-5	
अधिगम, शिक्षण और आकलन : प्रमुख मुद्दे एवं चुनौतियां	**Learning, Teaching and Assessment: major issues and challenges**
• अधिगम, शिक्षण और आकलन : विद्यालयी प्रक्रियाओं की समकालीन वास्तविकता • प्रमुख मुद्दे : मार्किंग बनाम ग्रेडिंग, बच्चों को फेल न करने की नीति (अनवरोध की नीति), वस्तुनिष्ठता बनाम विषयनिष्ठता • अधिगम शिक्षण और आकलन का जुड़ाव : युक्तियां एवं चुनौतियां; शिक्षक की भूमिका	• Learning, Teaching and Assessment: contemprorary realities of school practices • Major issues : Marking vs Grading, Non-detention policy, objectivity vs subjectivity • Relating learning, teaching and assessment: strategies and challenges, Role of a teacher

इस इकाई में पिछले सभी इकाइयों में सीखी गई अवधारणाओं को एक दूसरे से जोड़कर देखा गया है। साथ ही, यहां उन्हें विद्यालय के वास्तविक परिदृश्य में समझने पर भी बल दिया गया है। विद्यालयी प्रक्रियाओं में अधिगम, शिक्षण और आकलन को एक समेकित प्रक्रिया के रूप में कैसे बनाया जाए तथा इसकी क्या सीमाएं हैं, इस पर यहां चर्चा की जाएगी। खासकर, इनसे सम्बंधित जो व्यावहारिक मुद्दे हैं उनको समझा जाएगा। साथ ही, अधिगम, शिक्षण और आकलन व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए क्या युक्तियां होनी चाहिए और उसमें शिक्षक की क्या भूमिका हो सकती है, इस पर विशेष चर्चा की जाएगी।

Suggested readings:

- Andrade, H. L. (2013). Classroom assessment in the context of learning theory and research. In J. H. McMillan (Ed.), Sage handbook of research on classroom assessment. California, USA: Sage.
- Black, P. (2015). Formative assessment – an optimistic but incomplete vision. Assessment in Education: Principles, Policy & Practice, 22(1).
- Broadfoot, P. (1979). Assessment, schools and society. London, USA: Methuen & Co.
- Byrnes, D.A. (1989), Attitudes of students, parents and educators toward repeating a grade. In L.A. Shepard & M.L. Smith (eds.), Flunking grades: Research and policies on retention. London: Falmer Press.
- Cumming, J., & Maxwell, G. S. (1999). Contextualizing Authentic Assessment. Assessment in Education: Principles, Policies and Practices, 6(2),
- Darling-Hammond, L. (1998), Alternatives to grade retention. The School Administrator, 55,7.
- Deshpande, J.V. Examining the Examination System Economic & Political Weekly, April 17, 2004 Vol XXXIX, No. 16.
- Dweck, C. S. (2006). Mindset : The new psychology of success. New York: Ballantine Book
- Eggen, P. &Kauchak, D. (1999). Educational Psychology: Windows on Classrooms. (4th ed.). New Jersey : Prentice Hall
- Farrell, M. (2009).Foundations of Special Education: An Introduction. (4th ed.). Wiley Blackwell
- Frederickson, N. & Cline, T. (2009).Special Educational Needs, Inclusion and Diversity. (2nd ed.). New York: McGraw Hill Education Open University Press
- Gargiulo, R.M. (2015). Special Education in Contemporary Society 5e: An Introduction to Exceptionality. Canada: Sage
- Gilligan, C. (1982). In a different Voice: Psychological Theory and Women's Development. Cambridge: Harvard University Press.
- Hallahan, D.P., Kauffman, J.M. & Pullen, P.C. (2012).Exceptional Learners: An Introduction to Special Education. (12th ed.). New Jersey: Pearson Education.
- Jalaluddin, A. K. (2011). Ratane se Arth Nirman tak: Pathyacharya, Shikshanshastra aur Mulyankan mein Ferbadal. Shiksha Vimarsh, March-April issue.

Scanned with CamScanner

- Kumar, K. (2004). What is worth teaching? (3rd ed.). Orient Blackswan.
- Lampert, M. (2001). Chapter 1 & Chapter 2. In Teaching problems and the problems of teaching. Yale University Press.
- Laser, R., Chudowsky, N., & Pellegrino, J.W. (Eds.). (2001). Knowing what students know: The science and design of educational assessment. National Academies Press.
- Lefrancois, G.R. (1999). Psychology for Teaching. (10th ed.). London: Wadsworth Publishing.
- Mukunda, K.V. (2009). What did you ask at school today? A handbook of child learning. Harper Collins.
- Nawani, D (2012), Continuously and comprehensively evaluating children, Economic & Political Weekly, Vol. XLVIII, Jan 12, 2013.
- Nawani, D (2015). Re-thinking Assessments in Schools, Economic & Political Weekly, Jan 17, Vol L, No. 3.
- NCERT(2007) National Focus Group Paper on Examination Reforms
- Ormrod. J.E. (2000).Educational Psychology: Developing Learners. (3rd ed.). New Jersey: Prentice Hall
- Phillips, D. C. (1995). The good, the bad, and the ugly: The many faces of constructivism. Educational Researcher, 5–12.
- Piaget, J. (1926). Language and Thought of the Child. London: Routledge & Kegan Paul.
- Piaget, J. (1951). The Psychology of Intelligence. London: Routledge & Kegan Paul.
- Piaget, J. (1952). The Origins of Intelligence in Children. New York: International University Press.
- Piaget, J. (1997). Development and learning. In M. Gauvain & M. Cole (Eds.), Readings on the development of children. New York: WH Freeman & Company.
- Ranganathan.N. (2000).The Primary School Child: Development and Education. New Delhi : Orient Longman
- Sharma, P.L., A Teacher's Handbook on IED: Helping children with special needs, NCERT, New Delhi
- Shepard, L. A. (2000). The role of assessment in a learning culture. Educational Researcher, 4–14.
- Shepard, L. A. (2000). The role of assessment in a learning culture. Educational Researcher.
- Shulman, L. S. (1986). Those who understand: Knowledge growth in teaching. Educational Researcher, 4–14.
- Singh, Arun. K., Shiksha Manovigyan, Bharati Bhavan Publication, Patna.
- Slavin, R. E. (1997).Educational Psychology: Theory and Practice. (5th ed.). New Jersey: Allyn and Bacon.
- Stiggins, R. (2005). From formative assessment to assessment for learning: A path to success in standards-based schools. Phi Delta Kappan, 324–328.
- Vygotsky, L. (1997). Interaction between learning and development. In M. Gauvain & M. Cole (Eds.), Readings on the development of children. New York: WH Freeman & Company.
- Vygotsky.L. (1978).Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Cambridge Harvard University Press.
- Vygotsky.L. (1986).Thought and Language. Cambridge: The MIT Press.
- Woolfolk, A. (2014). Educational Psychology. (12th ed.). New Delhi: Pearson Education.
- Woolfolk, A., Misra, G. &Jha, A.K. (2012).Fundamentals of Educational Psychology. (11th ed.) New Delhi: Pearson.

Scanned with CamScanner

C-4

Language across the Curriculum

सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा

Unit-1	
शिक्षार्थी और उनकी भाषा	**Learners and their language**
• भाषा का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, महत्व, कार्य एवं पृष्ठभूमि • भाषा और धर्म, भाषा और कक्षा, साहित्य का भाषा में योगदान • गृहभाषा (मातृभाषा) तथा विद्यालयी भाषा / द्वितीय भाषा, औपचारिक और अनौपचारिक भाषा • मौखिक और लिखित भाषा–अर्थ, सिद्धान्त, उद्देश्य, महत्व, एवं सह–संबंध	• Meaning, nature, scope, role, importance, functions of language, language background • language and religion, language and Class, role of literature in language • Home language (mother tongue) and school language/second language, Formal and informal language • Oral and written language-meaning, principles, objectives, importance, Co-relation

इस इकाई का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को "भाषा क्या है" यह समझने में मदद करना है। भाषा की सबसे प्रचलित परिभाषा यह है कि भाषा संप्रेषण का माध्यम है। परन्तु यह भाषा की बहुत ही सीमित परिकल्पना है। इस इकाई में हम भाषा के विभिन्न पहलुओं के बारे में बातचीत करते हुए यह समझने का प्रयास करेंगे कि भाषा को किन–किन रूपों में समझा जा सकता है? साथ ही साथ, व्याकरण के दृष्टिकोण से ध्वनि, वाक्य एवं संवाद के धरातल पर भाषा की संरचना एवं विशेषताओं को समझने का भी प्रयास करेंगे। हम यह देखते हैं कि बच्चे अपने परिवेश के साथ सहज अन्तःक्रिया करते हुए भाषा सीख जाते हैं। यदि हम भाषा सीखने की इस प्रक्रिया पर ध्यान दें तो हमें यह समझने मे मदद मिलेगी कि कक्षा में भाषा सीखने की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए?

Unit-2	
भाषा, कौशल और भाषा प्रयोगशाला	**Language , skills and language laboratory**
• भाषा में मौखिक अभिरूचि, मौखिक सैद्धान्तिक भाषा की अभिरूचि, छात्राध्यापकों में मौखिक हावभाव / भाषण का विकास, सीखने के उपकरण का विचार विमर्श, कक्षा कक्ष में प्रश्न पूछना, पठन–पाठन में शिक्षण कौशल का पाठ्य पुस्तकों द्वारा विकास, गलत उच्चारण की समस्या और समाधान • भाषा कौशल–(एल.एस.डब्ल्यू.आर.–सुनना, बोलना, लिखना, पढ़ना,) अर्थ, महत्व, सहसंबंध, विधियां तथा तकनीकियाँ। • भाषा प्रयोगशाला :– आवश्यकता, महत्व, लाभ, इसकी शिक्षक प्रशिक्षण में उपयोगिता	• Oral aptitude in language, theoretical speech of oral apttitude, development of oral expression/speech in pupil-teacher, discussion as a tool of learning, questioning in class room, developing reading skill through text book, problems and remedies to incorrect pronunciation. • Language skills-(LSWR-Listening, speaking, writing, reading,) Meaning, importance, co-relation, methods and techniques • Language laboratory-Need, Importance, Advantage, Use in teacher's training

हमारे देश में कई प्रकार की विविधताएँ हैं। भाषायी विविधता भी उनमें से एक है। पूरे विश्व में लगभग 5000 भाषाएँ है उनमें से करीब 1600 से अधिक भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं। भारत के संदर्भ में यह कहना गलत नहीं होगा कि यहाँ अधिकांश व्यक्ति कम–से–कम दो भाषाएँ जानते हैं। यह जानते हुए भी कि भारत एक बहुभाषिक देश है स्कूलों में भाषा शिक्षण में ज़ोर किन्हीं एक या दो विशेष भाषाओं (अमूमन हिन्दी व अंग्रेजी) पर ही होता है। बच्चों की भाषाओं, जो कि इतनी विविधता लिये हुए होती है, उनको भाषा व बोली, शुद्ध भाषा, मानकीकृत भाषा जैसे मुद्दों के बीच दबा दिया जाता है। यह इकाई, भाषायी विविधता व बहुभाषिकता को समझने में मदद करेगी। इकाई में बिहार के बहुभाषिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए विस्तार से यह चर्चा की जाएगी कि हम इस भाषायी विविधता को स्वयं व बच्चों के भाषा–कौशलों के विकास के लिए एक संसाधन के रूप में उपयोग कैसे कर सकते हैं। भाषा इंसान की सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इंसान द्वारा सृजित की गई। इंसानों तथा उनकी आवश्यकताओं मे अन्तर होता है इस वजह से उनकी भाषा में भी अन्तर होता है। इस कारण भाषा में विविधता तथा स्तरीकरण का गुण पाया जाता है।

Scanned with CamScanner

Unit-3

विद्यालयी पाठ्यचर्या में कौशल	Skills in School Curriculum
• श्रवण कौशल:– उच्चारण, दाब, लय तथा मौखिक अभिरूचि • वाचन कौशल:– उच्चारण, दाब, लय तथा मौखिक अभिरूचि' • लेखन कौशल–लेखक के पहलू – आकार, ध्वनि, अर्थ, शब्दविन्यास संकेतन, शब्द, वाक्य, लेखन–अभिव्यक्ति, समझना एवं तार्किक संक्षेपण करने की सामर्थता, लेख, निबंध ,पत्र, कहानी लेखन, कविता, घटना, रिपोर्ट, आर्टिकल का वर्णन लिखना इत्यादि • पठन कौशल–व्यंजन, स्वर, शब्द, वाक्य, पहचान, समझ, मंद तथा उच्च पठन	• Listening skill-Pronunciation, stress, Rhythm and Oral aptitude. • Speaking skill- Pronunciation, , stress, Pitch, Rhythm and Oral aptitude. • Writing skill-Aspects of writing-shapes, sounds, Meanings, Punctuation marks, Word, Sentence, Experssion in Writing, understanding and capacity to write correct logical summarizing and expanding thoughts and experiences, composition, essay, story, letter, poetry, incidents, report, articles etc. • Reading skill- Consonants, Vowels, Words, Sentences, Recognition, Understanding, Silent reading and Loud reading

शिक्षार्थी जब विद्यालय आते हैं तब वे अपने साथ अपनी भाषा भी लाते हैं। कक्षा में वे अपनी भाषा में व्यक्तियों के साथ संवाद करते हैं। दूसरी तरफ, वे कक्षा में भाषा को पढ़ते भी हैं। अतः भाषा को लेकर शिक्षार्थियों के अनुभव बहुत समृद्ध होते हैं, अन्य विषयों की तुलना में। अतः, यह महत्त्वपूर्ण है कि भाषायी रूप से परिपक्व बच्चों के भाषायी उपयोग एवं स्तर के विकास में शिक्षक अपनी भूमिका के बारे में समझ बनाए एवं उसका उपयोग करे। इस इकाई में विद्यालयी पाठ्यचर्या के अन्दर भाषा के स्थान को समझने की विशेष कोशिश की गई है जिसमें पाठ्यपुस्तकों की भाषा कौशलों का विश्लेषण प्रशिक्षु समझ पायेंगे। यहां यह स्पष्ट करना है कि इस विषय में भाषा कौशल को पूरी पाठ्यचर्या के संदर्भ में देखे जाने पर जोर दिया गया है और इसलिए प्रशिक्षुओं को यह समझने का अवसर दिया गया है कि उनके द्वारा पढ़े या पढ़ाए गए विषय का महत्त्वपूर्ण स्रोत भाषा है। इसकी मदद से वह अपने विषय में ज्ञान का सृजन, भण्डारण, सम्प्रेषण, मूल्यांकन एवं संशोधन करते हैं। इसी कारण भाषा का स्थान स्कूली शिक्षा के पूरे पाठ्यक्रम में सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। भाषा न सिर्फ सम्प्रेषण का माध्यम है बल्कि यह अपनी कल्पना, सृजनात्मकता, संवेदना और कौशलों की अभिव्यक्ति का भी सशक्त माध्यम है। इन सब बातों की विस्तृत चर्चा इस इकाई में की जाएगी।

Suggested readings:

- Agnihotri, R. K. (1996). Kaun Bhasha Kaun Boli. Sandarbh 13, 37-43
- Agnihotri, R.K. (1995). Multilingualism as a classroom resource. In K. Heugh, A. Siegrühn, & P. Plüddemann (Eds.), Multilingual education for South Africa (pp. 3–7). Heinemann Educational Books.
- Agnihotri, R.K., & Kumar, S. (2001). Bhasha, boli aur samaj. Deshkal Publications.
- Anderson, R.C. (1984). Role of the reader's schema in comprehension, learning and memory. In R.C. Anderson, J. Osborn, & R.J. Tierney (Eds.), Learning to read in American schools: Basal readers and content texts. Psychology Press.
- Atwell, N. (1987). In the Middle: Writing, reading, and learning with the adolescents. Portsmouth:.Heineman.
- Grellet, F. (1981). Developing reading skills: A practical guide to reading comprehension exercises. Cambridge University Press.
- Kunwar, N. (2015). 'Right writing' in Indian classroom: learning to be artificial. Language and language teaching.Vol 4, No. 1, Issue 7.
- NCERT. (2006d). Position paper-National focus group on teaching of Indian language (NCF 2005). New Delhi: NCERT.
- Rai, M. (2015). Writing in Indian schools: the product priority. Language and language learning. Vol 4, No 1, Issue 7, 32-36
- Sinha, S. (2009), Rosenblatt's theory of reading: Exploring literature, Contemporary Education

Scanned with CamScanner

C-6

Gender, School and Society

जेण्डर, विद्यालय और समाज

किसी भी समाज के मानवीय होने की कसौटियों में से एक महत्वपूर्ण कसौटी यह है कि उसमें स्त्री और पुरुष के बीच सम्बन्ध कितने समतामूलक हैं। स्त्री और पुरुष के बीच असमानता को रचने के प्रयास बहुत पुराने हैं। अनेक कारणों से इनके बीच असमानता रचने वाले कारकों को पहचानने के प्रयास किये गये। भारतीय समाज तथा शिक्षा में इस प्रकार की असमानताओं के होने को समय–समय पर रेखांकित किया जाता रहा है। इसी प्रकार के प्रयासों में भिन्नता के होने तथा असमानता को रचे जाने के बीच फर्क को समझा गया। यह समझ में आने लगा कि स्त्री और पुरुष के बीच भिन्नता प्राकृतिक है लेकिन असमानता समाज द्वारा सृजित है।

इस विषय के माध्यम से प्रशिक्षु यह समझ बनाएँगे कि भिन्नता को असमानता में रूपांतरित करने के तरीके तथा प्रक्रियाएं कौन–कौन सी हैं। वे कौन से तरीके हैं जिनसे मर्द और औरत की छवियों को गढ़ा जाता है। वे इन छवियों को गढ़ने के तर्कों की समीक्षा करने में स्वयं को सक्षम बनाएँगे। प्रशिक्षु, मर्द और औरत की गढ़ी जा रही छवियों के शिक्षा के साथ सम्बन्ध के बारे में समझ बनाते हुए छवियों का लोकतांत्रीकरण और मानवीकरण करने के प्रयासों के बारे में समझ बनाएँगे। वे मर्द और औरत की छवियों को रचने की प्रक्रियाओं को समझकर शिक्षा के जरिये लैंगिक–समानता स्थापित करने की दिशा में स्वयं तथा अन्य एजेंसियों की भूमिका के बारे में समझ बनायेंगे।

Unit-1	
जेण्डर की समझ	Gender Issues: Key Concepts
• जेण्डर और लिंग की अवधारणा • जेण्डर पक्षपात, जेण्डर सम्बंधी रूढ़ीगत मान्यताएं, जेण्डर सशक्तिकरण की समझ • भारत में जेण्डर का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य • जेण्डर और पितृसत्ता	• Concept of Gender and Sex • Understanding Gender bias, gender stereotyping, and gender empowerment • Historical perspective of Gender in India • Gender and Patriarchy

Unit-2	
जेण्डर और समाजीकरण	Gender and Socialization
• जेण्डर सम्बंधी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य : समाजीकरण का सिद्धांत, जेण्डर विभेद, संरचनात्मक सिद्धांत, पुनर्रचनात्मक सिद्धांत • जेण्डर अस्मिता और समाजीकरण की प्रक्रियाएं : धर्म, परिवार, समाज, मीडिया, विद्यालय आदि की भूमिका	• Theoretical perspectives related to Gender: Socialization theory, Gender Difference, Structural Theory, Deconstructive theory • Gender Identities and Socialization Practices: Role of religion, family, society, media and School etc.

Unit-3	
जेण्डर अध्ययन : परिप्रेक्ष्यों का विकास एवं शिक्षक	Gender Studies: perspective development & Teacher
• जेण्डर से संबंधित शोधों का संदर्भ • जेण्डर सम्बंधी प्रमुख सामाजिक सुधार आंदोलनों की समझ • जेण्डर समानता में शिक्षा की भूमिका : लड़कियों के शिक्षा का महत्व • शिक्षक की परिवर्तनकारी एवं जेण्डर संवेदनशील भूमिका	• Context of researches related to gender • Landmarks from social reforms movements; focus on women's experiences of education, legistative • Role of Education for gender equality: Importance of schooling girls • Teacher: as an agent of change; gender sensitive professional

Scanned with CamScanner

Suggested readings:

- Chanana, Karuna. 1988 Socialization, Education and Women. Nehru Memorial Museum and Library: New Delhi
- Dube, Leela. 2000 Anthropological Explorations in Gender: Intersecting Fields. Sage Publications New Delhi
- Dube, Leela 1997. Women and Kinship: Comparative Perspectives on Gender in South and South-East Asia (New York: United Nations University Press)
- Beasley, Chris. 1999. What is Feminism: An Introduction to Feminist Theory. Sage: New Delhi
- Conway, Jill K., et al. 1987. 'Introduction: The Concept of Gender', *Daedalus*, Vol. 116, No. 4, Learning about Women: Gender, Politics, and Power (Fall): XXI-XXX
- Engineer, Asghar Ali. 1994. 'Status of Muslim Women', *Economic and Political Weekly*, Vol. 29, No. 6 (Feb.): 297-300
- Erikson, Erik H. 1964. 'Inner and Outer Space: Reflection on Womanhood', *Daedalus*, Vol. 93, No.2, The Woman in America (Spring): 582-606
- Ganesh, K. 1994. 'Crossing the Threshold of Numbers: The Hierarchy of Gender in the Family in India', *Indian Journal of Social Science*, 7(3 & 4): 355-62
- Ganesh, K. 1999. 'Patrilineal Structure and Agency of Women: Issues in Gendered Socialization' in T. S. Saraswathi (ed.), *Culture, Socialization and Human Development* Delhi: Sage Publications India Pvt. Ltd.
- Gardner, Carol Brooks. 1983. 'Passing By: Street Remarks, Address Rights, and the Urban Female', *Sociological Inquiry* 50: 328-56
- Gilligan, Carol. 1982. In a Different Voice England: Harvard University Press
- Government of India. 1975 a. *Towards Equality: Report of the Committee on the Status of Women in India* (Delhi: Department of Social Welfare, Government of India)
- Government of India. 1994. The Girl Child and the Family: An Action Research Study. Department of Women and Child Development Delhi: HRD Ministry, Government of India
- Hasan, Zoya and Menon, Ritu.. 2005. Educating Muslim Girls: A Comparison of Five Indian Cities Delhi: Women Unlimited
- Kumar, Krishna. 2010. 'Culture, State and Girls: An Educational Perspective' *Economic and Political Weekly* Vol. XLV No. 17 April 24
- Kumar, Krishna. 2013 *Choodi Bazar Mein Ladki*. Rajkamal: New Delhi
- Patel, Tulsi. 2007. 'Female Foeticide, Family Planning and State-Society Intersection in India' in Tulsi Patel (ed.), *Sex-Selective Abortion in India* Delhi: Sage Publications
- Ridgeway, Cecilia L. and Correll, Shelley J. 2004. 'Unpacking the Gender System: A Theoretical Perspective on Gender Beliefs and Social Relations', *Gender and Society*, Vol. 18, No. 4 Aug.
- West, Candace and Zimmerman, Don H. 1987. 'Doing Gender', *Gender and Society*, Vol. 1, No. 2 Jun.: 125-151

Scanned with CamScanner

EPC-1

Reading and Reflection on Texts

साहित्य का पठन एवं उस पर मनन

शिक्षा के साहित्य से तात्पर्य है ऐसे साहित्य से परिचय जो शिक्षा के विभिन्न आयामों पर विशेष प्रकाश डालता हो। वैसा साहित्य जो शिक्षा से संबंधित तमाम मुद्दों को समझने के लिए एक दृष्टिकोण देता हो तथा जिसे पढ़कर हमारी दृष्टि संवेदित होती है। शिक्षक के लिए ऐसा साहित्य कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा के साहित्य के माध्यम से प्राप्त होने वाली आलोचनात्मक समझ द्वारा एक शिक्षक विभिन्न शैक्षिक विमर्शों को कहीं बेहतर ढंग से समझ सकता है। अलग–अलग कालखंडों में शिक्षा के स्वरूप एवं उसमें हुए परिवर्तनों को जानना और साथ ही उस दौरान समाज के बदलते नजरिये को समग्रता से समझना भी शिक्षकों के लिए अतीत में है। इनकी छवि विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक रचनाओं में देखी जा सकती है जो अपने समय की शिक्षा व्यवस्था से जुड़े विभिन्न मुद्दों का काव्य, लेखों, कहानियों, व्यंग्य आदि के माध्यम से परिलक्षित करते हैं। ऐसी रचनाएं शिक्षा के स्वरूप में आए प्रमुख बदलावों के विभिन्न पहलुओं को जानने एवं समझने के लिए आज भी प्रासंगिक हैं। ये रचनाएँ आज के शिक्षाशास्त्र की विषयवस्तु के अलग–अलग पहलुओं पर एक विशेष तरह का प्रकाश डालती हैं। इनके द्वारा शिक्षा के दर्शन, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान की आपसी संबंध व हुए प्रभावों को जाना व समझा जा सकता है। इसे जानने और समझने का प्रयास प्रशिक्षुओं की चिन्तन प्रक्रिया को व्यापक करने में सहायक सिद्ध होगा। यह विषय उनके लिए संवेदनाओं के प्रशिक्षण का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस विषय में चार बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहला है ' रचना का काल संदर्भ' जिसका तात्पर्य है रचना के विषयवस्तु/प्रसंग को काल–खण्ड में स्थापित करके समझना; समय के अनुसार शिक्षा के बदलते स्वरूप को समझना; काल–विशेष में शिक्षा से सामाजिक अपेक्षाओं व प्रभावों की समीक्षा करना। दूसरा बिन्दु है 'रचना की मीमांसा' जिससे तात्पर्य है कि किसी साहित्य से शिक्षा के किस पहलू पर प्रकाश पड़ता है, इसे समझना। उदाहरण समवय समूह सम्बंध, शिक्षक की प्रकृति, समाज की शिक्षा के ऊपर दृष्टिकोण, बाल मानस, इत्यादि। तीसरा बिन्दु है 'रचना से अनुभूति' जिससे तात्पर्य है कि पाठक के रूप में वह आपकी किन अनुभूतियों अथवा स्मृति संदर्भों को जगाती हैं अर्थात ऐसे प्रसंग जो आपके अनुभवों से मेल खाते हो। चौथा बिन्दु है 'विवेचना की बहुआयामिता' से तात्पर्य है स्वतंत्र विवेचना का हक। यानि, प्रत्येक पाठक अपने अनुसार पढ़े गये रचनाओं की विवेचना करे। किसी भी प्रकार का मानक विवेचना पाठक पर आरोपित न की जाये।

Unit-1	
प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य	**Ancient and Medieval Literature**
इस इकाई में प्राचीन एवं मध्यकाल के कुछ वैसे साहित्यों का पठन किया जाएगा जो उस समय की शिक्षा को दर्शाते हैं। इस दिशा में, निम्नलिखित साहित्यों को मूल अध्ययन के लिए चुना गया है : • उपनिषदों से संवाद अंश • पंचतंत्र की कहानियां • बौद्ध साहित्य से कथाएं (जातक, थेरी एवं थेर गाथा) • जैन साहित्य से कथाएं • गुलिंस्ता–बोस्ता से कथाएं एवं अन्य साहित्य इस इकाई में और भी कई प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्यों को जोड़कर संवर्धित किया जा सकता है।	This unit is focused on reading some ancient and medieval literatures which are relevant to understand education of their time. The following literatures are identified as key readings: • Dialogue from *Upanishada* • Stories from *Panchtantra* • Stories from Buddhist literature (*Jataka, Theri & Ther Gatha*) • Stories from Jain literature • Stories from *Gulinsta-Bosta* and other related literature. *The unit is flexible in nature. Many more ancient and medieval literatures can be added to this unit to make it more enriched.*

इस इकाई में जिन प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्यों का उल्लेख किया गया है, उनसे सिर्फ कुछ चयनित अंशों का ही इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत अध्ययन किया जाएगा जिससे उस काल की शिक्षा को समझने में मदद मिलती है।

Scanned with CamScanner

Unit-2	
आधुनिक और समकालीन साहित्य	Modern and Contemporary Literature
इस इकाई में वैसे आधुनिक व समाकालीन साहित्यों को पढ़ने पर ज़ोर है जिसमें शिक्षा के मुद्दों को सार्थक तरीके से उठाया गया है। इस इकाई में विभिन्न भाषाओं व सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों से साहित्यों को प्रस्तुत किया गया है। इस दिशा में, निम्नलिखित साहित्यों को मूल अध्ययन के लिए चुना गया है • बिनोवा भावे की रचना 'शिक्षक' • प्रो. डी. एस. कोठारी द्वारा रचित 'शिक्षा और जीवन मूल्य' • महादेवी वर्मा कृत 'शिक्षा का उद्देश्य' • श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित 'रागदरबारी' के अंश • कृष्ण कुमार द्वारा रचित 'चूड़ी बाज़ार में लड़की' से अभिमन्यु की शिक्षा' वाला अंश • प्रो. अनिल सद्गोपाल का लेख 'साक्षरता: राष्ट्रीय ध्येय या शैक्षिक मापदण्ड' • अवधेश प्रीत द्वारा रचित 'तालीम' • तुलसीराम द्वारा रचित 'मुर्दहिया' • डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी का लेख 'शिक्षा की ललक' • बिरेन्द्र सिंह रावत का लेख 'क्या कहते हैं सवाल'	This unit is related to read some modern and cotemporary literatures which have raised the issues of education meaningfully. The unit contains literatures from different languages and socio-cultural contexts, so that it will provide an enriched space for reflection. The following literares are identified as key readings : • *'Shikshak'* by Binova Bhave • *'Shiksha aur Jeevan Mulya'* by Prof. D.S. Kothari • *'Shiksha ka Uddeshya'* by Mahadevi Verma • Excerpts from *'Ragdarbari'* by Shrilal Shukl • *'Abhimanyu ki Shiksha'* from 'Churi Bazaar mein Ladaki' written by Krishna Kumar • *'Saksharata: Rashtriya Dhyey ya Shaikshik Maapdand'* by Prof. Anil Sadgopal • *'Taleem'* story written by Avdhesh Preet • *'Murdahiya'* written by Tulsiram • *'Ek School ka Bayan'* by Dr. Gyandeo Mani Tripathi • *'Shiksha ki Lalak'* by Dr. Gyandeo Mani Tripathi • *'Kya kahate hain Savaal'* by Birendra Singh Rawat *The development of contemporary literatures is limitless. Therefore, besides these key readings, there is ample space to add many more new contemporary literatures in this unit.*

शिक्षा की समकालीन समझ के नजरिए से यह इकाई विशेष महत्व का है। इसमें जिन साहित्यों को लिया गया है, उनके अध्ययन से शिक्षा और समाज के भिन्न–भिन्न मुद्दों की समझ मिलेगी।

Unit-3	
स्थानीय साहित्य	Local Literature (Bhojpuri)
यह इकाई शिक्षा के मुद्दों से सम्बंधित स्थानीय साहित्यों के पठन पर आधारित है, जो निम्नलिखित हो सकते है : • स्थानीय कथाएं • लोकोक्तियां • लोक गीत • जीवन कथाएं संस्थान अपने स्तर पर इन साहित्यों का संकलन करेगी जिसमें इसके शिक्षक एवं प्रशिक्षुओं की भूमिका होगी।	This unit is focused on collecting and reading local literatures related to education and its issues. The literatures can be : • local stories • folktales • folk songs • life stories *The institution will make a collection of above mentioned literatures at its level with the help of the trainee teachers and faculties. They will search the local literature resources.*

शिक्षक को अपने स्थानीय संस्कृति के प्रति सजग बनाने तथा स्थानीय स्तर के शिक्षायी मुद्दों को अकादमिक रूप से समझने के उद्देश्य से इस इकाई की कल्पना की गई है। इसलिए, यह एक ऐसी इकाई है जिसकी सामग्री को शिक्षकों एवं प्रशिक्षुओं द्वारा स्वयं खोजकर और फिर उनका संकलन करके अध्ययन करना है। इसमे उन तमाम स्थानीय साहित्यों को शामिल करने की सम्भावना है जो समाज में तो मौजूद हैं लेकिन शिक्षक के चिंतन का विषय नहीं बन पाए हैं।

Scanned with CamScanner

EPC-2

Drama and Art in Education

शिक्षा में नाट्य और कला

हमारे समाज को प्राचीन काल से ही इसका गहरा बोध है कि मानव की शिक्षा में कला का विशेष स्थान है और कला से तो इसका गहरा संबंध है। प्लेटो ने लिखा है कि "हमें ऐसे कलाकारों और शिल्पकारों की खोज करते रहना चाहिए जो इस जानकारी के माहिर हैं कि प्रकृति में क्या सुन्दर है। तभी हमारे नवयुवक स्वस्थ वातावरण में रहकर समझेंगे कि जीवन में वह क्या है जो उनके वातावरण को स्वस्थ बनाता है। हमें यह देखना है कि उन्हें बचपन से ही पहचान हो कि क्या सुन्दर है और क्या उचित। इसीलिए शिक्षा का चरण बड़ा निर्णायक है।" इस प्रकार कला एवं कला शिक्षा 'शैक्षिक प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है और इसके महत्त्व को अब शिक्षा के हर स्तर पर स्वीकार किया जाने लगा है। इसके बावजूद शिक्षा या देश के अन्य किसी भाग में इसे व्यवहार में उतारने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया है। आमतौर पर, कला को पाठ्येत्तर गतिविधि समझा जाता है, वह भी बगैर किसी महत्त्व के, जिसका इस्तेमाल कुछ खास अवसरों पर महज दिखावे भर के लिए होता है। अधिकांश माता–पिता और शिक्षक/शिक्षिका कला और खेल को अध्ययन से अनावश्यक विचलन मानते हैं, मगर शिक्षार्थियों का मन सामान्यतः आकादमिक विषयों के अध्ययन से कहीं ज्यादा इन्हीं दोनों में लगता है। इससे सृजनात्मक या सौंदर्यशास्त्रीय पहलू सदा उपेक्षित रह जाते हैं। यदि देखा जाए तो कला और शिल्प की शिक्षा, शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व के विकास का उपयोगी जरिया हो सकती है। व्यक्तित्व के विकास, सौंदर्यबोध के विकास और प्रवृत्तियों, मूल्यों के निर्माण में कला का प्रत्यक्ष योगदान होता है। शिक्षाशास्त्रीय उद्देश्य से कला, शिल्प और संस्कृति का अनेक तरीकों से उपयोग किया जा सकता है– संसाधन के रूप में, माध्यम के रूप में और विकसित किए जा सकने वाले कौशल के रूप में। कलाएँ जहाँ हमारे जीवन और अधिगम को समृद्ध बनाते हैं, वहीं इनका उपयोग शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं को सरल, सुगम, आनन्ददायी और रोचक बनाने में भी किया जा सकता है। इस विषय के विभिन्न इकाइयों के माध्यम से हम नाट्य और कला शिक्षा के बारे में चर्चा करेंगे। नाट्य एक ऐसी विधा है जो शिक्षण को जीवन्त और सरल बना सकती है। अतः प्रशिक्षुओं की इसकी सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक समझ पहली इकाई मे दी जाएगी। इसके अलावा अन्य दृश्य कलाओं, शिल्पों को भी समझना तथा शिक्षा में उनके प्रयोग को सुनिश्चित करने पर भी दूसरी एवं तीसरी इकाई में चर्चा की जाएगी। साथ ही यह स्पष्ट करना होगा कि यह एक प्रायोगिक विषय है। अतः सिर्फ सिद्धांतों को समझने मात्र से काम नहीं चलेगा बल्कि उनका प्रयोग जरूरी है।

Unit-1	
प्रदर्शन कला के रूप में नाट्य	**Drama as Performing Art**
• नाट्य : अवधारणा की समझ और शिक्षा में इसका महत्व • नाट्य एक शिक्षणशास्त्र के रूप में • नाट्य का आयोजन : तैयारी और संसाधन, ड्रैमेटिक सोसाईटी या नाट्य समूह का निर्माण • नाट्य के स्वरूप : एकल, समूह • नाटक करना : कहानी, संवाद, चरित्र, संकेत, मंच की सजावट, रौशनी, भिन्न–भिन्न स्थितियों का निर्माण करना • भारतीय और क्षेत्रीय नाट्य परम्पराओं का ज्ञान • शिक्षार्थियों में नाट्य कला को प्रोत्साहित करना • नाट्य प्रदर्शन की समीक्षा और आकलन	• Understanding the concept of Drama and its relevance for Education • Drama as a pedagogy • Organizing Drama: preparatory activities and resources, dramatic society • Forms of Drama: Solo, group • Playing Drama: Story, dialogue, characters, symbols, decoration of floor, lighting, creating different situations. • Knowledge of Indian and regional drama traditions • Appreciating art of Drama in learners • Review and assessment of performing art of 'Drama'

Scanned with CamScanner

Unit-2	
दृश्य कला एवं शिल्प	**Visual Arts and Crafts**
• दृश्य कला एवं शिल्प की समझ तथा शिक्षा में उनका महत्व • दृश्य कला एवं शिल्प एक शिक्षण–शास्त्र के रूप में • दृश्य कला एवं शिल्प : विविध स्वरूप, बुनियादी संसाधन तथा उनकी उपयोगिता • क्षेत्रीय लोक कलाओं एवं शिल्प परम्पराओं का ज्ञान • समकालीन भारतीय दृश्य कलाओं, शिल्पों एवं कलाकारों का ज्ञान • शिक्षार्थियों में दृश्य कला एवं शिल्प को प्रोत्साहित करना • दृश्य कला एवं शिल्प की समीक्षा और आकलन	• Understanding visual Arts and Crafts with their relevance for Education • Visual Arts and Crafts as pedagogy • Visual Arts and Crafts: different forms, basic resources and their use • Knowledge of Indian Craft Traditions and regional folk arts • Knowledge of Indian Contemporary Visual Arts & crafts and Artists • Appreciating visual arts and crafts in learners • Review and assessment of visual arts and crafts

Unit-3	
कला–आधारित अधिगम और शिक्षक की भूमिका	**Art-aided Learning and role of a teacher**
• नाट्य कला को विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ जुड़ाव • कला एवं शिल्प को विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ जुड़ाव • विद्यालय और कक्षाकक्ष को कला–आधारित अधिगम के जगह के रूप में देखना • कला आधारित अधिगम के लिए शिक्षक की तैयारी	• Integrating Drama with School Curriculum • Integrating Arts and Crafts with School Curriculum • Visualizing School and Classroom as a space for art aided learning • Preparation of teacher for art aided learning

Suggested readings:

- Aanderson, T. And Milbrandet,M.K. (2004). "Art For Life : Authentic Instruction In Art", Mcgraw Hill.
- Armstrong, M. (1980). The practice of art and the growth of understanding. In Closely observed children: The diary of a primary classroom (pp. 131–170). Writers & Readers.
- Davis, J.H. (2008). Why our schools need the arts. New York: Teachers College Press.
- Heathcote, D., & Bolton, G. (1994). Drama for learning: Dorothy Heathcote's mantle of the expert approach to education. Portsmouth. NH: Heinemann Press.
- Jeswani, K. K. (1966). Art in Education. Atma Ram and Sons, Delhi.
- Jeswani, K. K. (1965). Teaching and Appreciation of Art In Schools, . Atma Ram and Sons, Delhi, 1965.
- John, B., Yogin, C., & Chawla, R. (2007). Playing for real: Using drama in the classroom. Macmillan.
- Lakhyani,Susmita (2012). "Art Creativity and Art Education", Lap Lambert Academic Publishing, ISBN-978-3-8473-7821-1.
- Lowenfeld, Victor (1952). Creative and Mental Growth. Macmillan Company, New York.
- Mago, P.N. (2000). Contemporary Art in India - A Perspective. National Book Trust, New Delhi, India. 2000.
- Prasad, Devi (1998). Art as the basis of education. National Book Trust. Retrieved from http://www.vidyaonline.net/list.php?pageNum_books=2&totalRows_books=62&l2=b1%20&l1=b1%20&l3=b1tp

Scanned with CamScanner

EPC-3

Critical Understanding of ICT

आई.सी.टी. की आलोचनात्मक समझ

वर्तमान समय में सूचना एवं संचार तकनीकी हमारे सामाजिक अंतःक्रिया का एक आवष्यक अंग बन चुकी है। शिक्षा में तकनीकी का इस्तेमाल कोई नई बात नहीं है। संचार प्रौद्योगिकी के विभिन्न अन्वेषणों के द्वारा शिक्षा व्यवस्था में क्रान्तिकारी बदलाव लाये जा रहे हैं। आज अनेक प्रकार के सूचना व संचार तकनीक समर्थित शिक्षा व अध्यापन विधियों का प्रयोग शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान को सवंर्द्धित करने के लिये किया जा रहा है। इन तकनीकों के कारण शिक्षा में हो रहे नवाचार के साथ–साथ सुदूर क्षेत्रों तक शिक्षा का प्रसार भी हो रहा है। सूचना व संचार तकनीक के विभिन्न माध्यमों द्वारा सूचनाओं के संग्रहण, संचयन, सुगम उपयोग तथा तेजी से आदान–प्रदान की सुविधा है। शिक्षा के क्षेत्र में नई संचार तकनीकों के उपयोग ने शिक्षक की भूमिका को सवंर्धित, शिक्षण में अद्यतन ज्ञान के समावेषन, बच्चों में प्रभावकारी अधिगम को उत्साहित करने का काम किया है। साथ ही साथ, तकनीकी के प्रयोग ने शिक्षक के अन्य कार्यों जैसे मूल्यांकन, रिकार्डों के सुगम संधारण, अभिभावकों से सम्पर्क, आदि को सरल एवं प्रभावकारी बनाया जा सकता है। विषिष्ट आवष्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के लिए भी सूचना व संचार तकनीक का विषेष महत्त्व है। एक अध्यापक इस तकनीक के कुषल प्रयोग द्वारा अपने कार्यों को व्यवस्थित तथा अपने षिक्षण को प्रभावी बना सकता है। आई.सी.टी. तकनीकी का षिक्षण अधिगम कार्यों में उपयोग के लिये यह आवष्यक है कि शिक्षकों में इसके प्रयोग से षिक्षण कौषल की क्षमता विकसित की जावे। इस विषयपत्र के विषयवस्तु के माध्यम से प्रशिक्षु नवीन आई.सी.टी. संसाधनों को शैक्षिक प्रक्रियाओं में प्रयोग करने की समझ विकसित कर पाएंगे। यहां यह स्पष्ट करना है कि यह मूलतः एक प्रायोगिक विषय है। अतः इसके लिए सैद्धांतिक समझ के साथ–साथ प्रयोगों को करना बहुत महत्वपूर्ण है जिसकी अपेक्षा प्रशिक्षुओं से है।

Unit-1	
सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.) से परिचय	Introduction to Informatic n & Communication Technology (.CT)
• सूचना एवं संचार तकनीकी : अवधारणा एवं शिक्षा के लिए महत्त्व • सूचना एवं संचार तकनीकी–लक्ष्य एवं उद्देश्य • सूचना तकनीकी का अर्थ, आवश्यकताएं एवं भारत में आई0 सी0टी0ई0 शिक्षा का विकास (सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के पक्ष में) • सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के साधन – माध्यम, बहुमाध्यम शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की भूमिका • टेली कान्फ्रेंसिंग, कम्प्यूटर, कम्प्यूटर सहायक अधिगम तथा शिक्षण एवं इन्टरनेट, इलेक्ट्रॉनिक मेल	• Concepts of ICT and its relevance for Education • Aims and objectives of ICT. • Meaning , Needs and Development of Information Techonology in Education in India (Its relevance for Education) • Tools of ICT – Media, Multimedia Role of Information and communication technology in Education • Tele Confrencing, Computer, Computer Assisted Learning and Teaching & Internet, Electronic mail

Unit-2	
कम्प्यूटर की समझ	Understanding Computer
• परम्परागत एवं आधुनिक सूचना तथा सम्प्रेषण तकनीकियाँ, सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के लाभ एवं उपयोगिता • ई–लर्निंग की प्रकृति, विशेषताएं, विभिन्न प्रारूप एवं शैलियाँ • ई–विषय वस्तु का वर्तमान में शिक्षा में प्रयोग, ई–मैग्जीन, ई–जर्नल्स, एडूकॉम्प स्मार्ट क्लास कार्यक्रम	• Traditional and Modern ICT'S, Use and Advantages of ICT • Nature , Characteristics, Modes and Styles of E-Learning • Uses of E-Content in present scenerio, E-Magazines, E-Journals, Programmes of Educomp Smart Classes

Scanned with CamScanner

C-7a & C-7b

Pedagogy of Geography

Unit-1 : Geography Education: Perspective and Development

- Meaning, nature and Importance of geography
- Reflecting on the aims and objectives of teaching geography
- Geography and Human beings: Sustainability and cultivation of organic relationship
- Relationship of geography with other social and natural science subjects.
- Basic Principles and Approaches for the construction and thematic organization of geography curriculum at secondary level.

Unit-2 : Developing Skills in Geography

Observation, recording and interpretation of physical and social features and phenomena; Reading and interpreting geographical information through tables, figures, diagrams, photographs; Use of Globe; Map reading and interpreting using scale (distance), direction, symbols, point, line and area; Visual-to-verbal and verbal-to-visual transformation leading to mental mapping; Identifying, constructing and asking geographical questions; Developing and gathering relevant information and data and analysing them to answer geographical questions and offering explanations and interpretations of their findings; applying acquired knowledge and skills for understanding the wider world and taking personal decisions; taking up activities to study environmental degradation in the local area and its preservation methods; studying any disaster involving all factors at the local/global levels; Importance of excursion for developing skills in Geography

Unit-3 : Pedagogy and Assessment in Geography

- Methods: Questioning; Collaborative strategies; Games, simulations and role plays; Problem-solving and decision-making; Interactive verbal learning; Experiential learning through activities, experiments; Investigative field visits based on students' own interests with teacher's support as facilitator; Engagement with 'places' at an emotional or sensory level using art, poetry and literature.
- Techniques: Using textbooks and atlas as a part of oral lessons, non-oral working lessons; using medium and large scale maps; using pictures, photographs, satellite imageries and aerial photographs; using audio-visual aids, CDs, multimedia and internet; case study approach.
- Learning Plan for Geography: Nature and Structure
- Evaluation & Assessment Modes: formative-summative evaluation, Continuous and Comprehensive Evaluation Programme, Self-assessment, Peer assessment, Group assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' portfolio.

Suggested Readings:

Armstrong, D. and T. V. Savage (1994) Secondary education, Macmillan, New York.

Arora & Awasthy (2003), Political theory, Haranand Publication Pvt. Ltd. New Delhi.

Digumarti B.R. & Basha S.A., Methods of Teaching Geography, Discovery Publishing House, N. Delhi.

Dubey, S.K., Advanced Geography teaching, Book Enclave, Jaipur.

Ellis, A. K. (1995), Teaching and learning elementary social studies, Boston: Allyn and Bacon.

Scanned with CamScanner

Hunt & Metcalf (1968), Teaching high school social studies, Harper & Row Publishers, New York, London.
Hussain Majid, Ed. Methodology of Geography
Keith, Webb (1995) An Introduction to problems in the Philosophy of Social Sciences,Pub.- Pinter, London, New York.
Kochhar, S.K.(1985), Methods and Techniques for teaching, Sterling Publishers Pvt. Ltd, New Delhi.
Martorella, Peter H. (1996), Teaching social studies in middle and secondary schools, Englwood Cliffs, N.J: Prentice Hall.
Nachmias, D.,Nachmias, C. F.(1996), Research methods in social science, St. Martin's Press, Inc, New York.
Negi Vishal, New Methods of Teaching Geography, Cybertech Publications New Delhi.
Philip, C. (1963). The Teaching of Geography, London: George Philip & Sons Ltd., 1963.
Rai, B. C., Teaching of Geography, Prakashan Kendra, Lucknow.
Savage, Tom V. and Armstrong, David G. (1992) Effective teaching in elementary social studies, Macmillan Publishing Co., New York
Shaida, B.D. and Shaida A.K.(1983), Teaching social science, Arya Book Depot, New Delhi.
UNESCO, Source Book for Geography Teaching, Long-mans.
Winch, Peter (1958), The Idea of a Social Science and its relation to Philosophy by, Pub.- Routledge and Kegan Paul, London, New York: Humanities Press.
Zaidi, S.M.; Modern Teaching of Geography, Anmol Publication, N. Delhi.
Zevin,J.,(2000), Social studies for the twenty first century, Lawrence Erilbaum Associates Publishers, London.

Pedagogy of History

Unit-1 : History: Principles and Practices

- Understanding history: Conceptual basis of history as a discipline, historical sources, objectivity and truth.
- Philosophy of history- Speculative, Analytic, The end of history- the post modernist challenge.
- Need and importance of history at school level.
- Correlation of History with other social and natural sciences.
- Basic Principles and Approaches for the construction and thematic organization of History curriculum at secondary level

Unit-2 : Developing Skills in History

Observation of skills relating to primary and secondary data; Observing coins, inscriptions (if available), the material remains of the past and visuals; Helping children to read passages from primary sources; Thinking about what all these sources might or might not reveal; Learning to analyse critically and to argue; Observing how arguments have been made in the standard secondary sources and how these muster facts and evidences; Helping children to develop oral and written expression; Importance of excursion in developing skills in History

Unit-3 : Pedagogy and Assessment in History

- Historical Method: Evidence, facts, arguments, categories and perspective; Distinctions between fact and opinion and between opinion, bias and perspective; Evidence-based History teaching; primary sources and the construction of History; Thinking in terms of problems for analysis in History.
- Pedagogical Concerns Regarding School History: Interactive, constructivist and critical pedagogies in History; Going beyond the textbook; Getting children to craft little nuggets of History from primary sources;
- Learning Plan for History: Nature and Structure
- Evaluation & Assessment Modes: Formative-Summative Evaluation, Continuous and Comprehensive Evaluation Programme, Self-assessment, Peer assessment, Group assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' portfolio.

Suggested Readings:

Arthur, James and Phillips,Robert (2004),Issues in History Teaching, Routledge Falmer, London

Bhasin,Kamla (1994).What is Patriarchy?Kali for Women, New Delhi

Carr, E. H. (1961). What is History, University of Cambridge and Penguin, India. (Also available in Hindi as Itihaaskyahai Published by McMillan)

Das,Veena (1989). Subaltern as Perspective in Ranajit Guha(ed.)Subaltern Studies No.6 Writings on South Asian History and Society,Oxford University Press,London

Gallanvan&Kottler, Ellen (2008), Secrets to success for social studies teachers, Crowin Press, Sage Publication, Thousand Oaks, CA 91320.

Habib,Irfan (1995).Essays in Indian History – Towards a Marxist Perception.TulikaBooks,Delhi

Kochhar, S.K. (1985), Methods and Techniques for teaching History, Sterling Publishers, New Delhi.

Kumar,Krishna (2001),Prejudice and Pride: School Histories of the freedom Struggle in India and Pakistan,Penguin,New Delhi (Also available in Hindi as MeraDeshTumharaDesh published by Rajkamal in 2007).

Lemon, M. C. (2003), Philosophy of History, Routledge, Oxon, New York.

Menon,N.(2010),History,truth and Nation:Contemporry debates on education in India in

Misra, Salil and Ranjan, Ashish (2012).Teaching of Social Sciences: History,Context and Challenges in VandanaSaxena (ed.),Nurturing the Expert Within, Pearson,Delhi

Nambiar, Jayashree (2010).Beyond Retention:Meaningful Assessment in Social Science

Nawani, Disha (2015). Re-thinking Assessments in Schools,*Economic& Political Weekly*,Jan 17, Vol L, No. 3, 37-41.

Pathak, S.P. (2005), Teaching of History- The Paedo Centric Approach, Kanishka Publishers, New Delhi.

Phillips, Robert (2002), Reflective Teaching of History, 11-18, Continuum Studies, in Reflective Practice and Theory, Continuum, London, New York.

Phillips,Ian (2008),Teaching History.Sage,South Asia Edition,Delhi

Ranjan, Ashish (2009), "History curriculum" in T.Geetha (ed.) A Comparative Study of Curriculum inI.B., C.I.S.C.E. And C.B.S.E. Boards,Project Report of The International Baccalaureate,Singapore

Sreedharan, E. (2004), A Textbook of Historiography 500 B.C. to A.D. 2000, Orient Longman, New Delhi.

Thapar,Romila (1975).The Past and Prejudice (Sardar PatelMemorial Lectures), National Book Trust, New Delhi

Thapar,Romila (2014).The Past As Present: Forging Contemporary Identities Through History, Aleph,New Delhi

Tyagi, Gurusharan Das (1995).Itihas Shikshan,VinodPustakMandir,Agra.(In Hindi)

Scanned with CamScanner

Pedagogy of Civics

Unit-1 : Civics: Principles and Practices

- Meaning, nature and scope of Civics and its philosophical and theoretical basis.
- Concept of Civics and Political Science.
- Need and importance of Civics at school level.
- Critical appraisal of existing curriculum of Civics and text book at school level.

Unit-2 : Issues and Challenges of Teaching Civics

- Construction of knowledge and process of knowledge generation in Civics.
- Pre-conceptions and misconceptions in Civics
- Critical pedagogy in Civics
- Development of Teacher as a Reflective Practitioner and a Researcher
- Teaching Civics to the learners with special needs (differently abled and gifted).

Unit-3 : Pedagogy and Assessment in Civics

- Aims and objectives of teaching Civics in a Democratic Country.
- Approaches of teaching Civics: Inductive, Deductive, Interdisciplinary and Constructivist approaches.
- Methods of Teaching Civics: story telling, lecture, question-answer, discussion, text-book; problem solving, project, source, activity methods, observation, excursion, dramatization, current events, community resources, mass media.
- Material and Aids for Teaching- Learning Processes: Typologies and Justification.
- Learning Plan for Civics: Nature and Structure
- Evaluation & Assessment Modes: Formative-Summative Evaluation, Continuous and Comprehensive Evaluation Programme, Self-assessment, Peer assessment, Group assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' portfolio.
- Application of ICT in a Civics classroom

Suggested Readings:

Arora, P (2014). Exploring the Science of Society. Journal of Indian Education. NCERT, New Delhi.

Arora, P (2014). A Democratic Classroom for Social Science, Project Report, University of Delhi, Delhi.

Bining, A.C. & Bining, D.H.(1932), Teaching of political science in secondary schools, Tata McGraw Hill Publishing Co. Ltd. Bombay.

Edgar, B.W. & Stanely (1938), Teaching social studies in high school, Heath and company, Boston D.C.

George, A., M. &Madan, A. (2009) Teaching Social Science in Schools. Sage Publications India Pvt. Ltd. New Delhi.

Hamm, B. (1992).Europe - A Challenge to the Social Sciences. International Social Science Journal (vol. 44).

Kirkpatrick, Ecron, (1997). Foundation of Political Science: Research, Methods and Scope, New York, The free press.

Kumar, Sandeep (2013). Teaching of Social Science, Project Report, University of Delhi, Kirkpatrick, Ecron. (1997). Foundation of Political Science: Research, Methods and Scope, New York, The free press.

Mayor, F. (1992).The role of the Social Sciences in a changing Europe. International Social Science Journal (vol. 44).

Popper, Karl. (i9yi).The Open Society and its Enemies. Princeton University Press.

Prigogine, I., & Stengers I. (1984). Order Out of Chaos: Man's New Dialogue with Nature. Batnam Books.

Wagner, P. (1999). The Twentieth Century - the Century of the Social Sciences? World Social Science Report.

Wallerstein, I. et al., (1996). Open The Social Sciences: Report of the Gulbenkian commission on the

Scanned with CamScanner

Pedagogy of Economics

Unit-1 : Economics: An introduction

- Economics and Commerce
- Meaning, nature and scope of Economics
- Need and importance of teaching Economics at schools (Secondary and Senior Secondary level)
- Relationship and sharing of Economics with other disciplines and its role and position in constituting inter-disciplinarily.
- Economics teaching at micro and macro level.

Unit-2 : Curricular Content of Pedagogy

- Aims and objectives of learning and teaching of Economics at school (Secondary and Senior Secondary level).
- Approaches/Perspectives and principles of constructing curriculum for school Economics (With respect to independent or integrated or inter disciplinary).
- Critical understanding of Curriculum, Syllabus and textbooks of school Economics.

Unit-3 : Pedagogy and Assessment in Economics

- Teaching-Learning Methods in Economics: In addition to usual methods like lecture, discussion, storytelling, other methods like problem-solving, simulation games, use of media and technology, concept of mapping, project and activities like field visits (e.g. visit to a construction site for data on wages and employment), collection of data from documents (e.g. Economic Survey, Five Year Plan), analyzing and interpreting data (using simple tables, diagrams and graphs) can be undertaken, Self-study and collaborative learning activities should be encouraged.
- Teaching-Learning Materials: Using textbook, analysis of news (Newspaper, TV, and Radio); documents (e.g. Economics Survey, Five Year Plan), Journals and News Magazines.
- Learning Plan for Economics: Nature and Structure, Evaluation & Assessment Modes: Formative-Summative Evaluation, Continuous and Comprehensive Evaluation Programme, Self-assessment, Peer assessment, Group assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' portfolio

Sugested Readings:

Agarwal Manju (2011), *'Economics as a Social Science' National Seminar on Economics in Schools.* NCERT (Follow the link http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dess/publication/print_material/ teaching-economics-in-india.pdf).

Agarwal Manju (2012) *'Teaching a Topic of Indian Economy using Unit Plan Approach'.* Teaching Economics in India - A Teacher's Handbook, NCERT Delhi Follow the link http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dess/publication/print_material/ teaching-economics-in-india.pdf).

Agarwal Manju, *'Consumer Education'*, (2013) Study Material for Secondary Level Economics' – NIOS, Delhi.

Agarwal, Manju (2012), *"Planning for Effective Economics Teaching: Teaching economics in India-* A Teachers' Handbook' NCERT Delhi.

Scanned with CamScanner

Agarwal, Manju, Arora, N. (2014). *'Concept Learning in Economics, at Secondary Level: ACurricular Dimension'.*A report of National Seminar on Economic Curriculum in Schools. Emerging Trends and Challenges. NCERT. (Follow the link – http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dess/publication/non print/seminars.pdf).

Hutchings,A N S.Assistant Masters Association 1971.Teaching of Economics in Secondary schools

Katty R Fox (2010). *"Children making a difference : Developing Awareness of Poverty Through Service Learning".* The Social Studies', Vol. 101, Issue 1, 2010.

Lutz,Mark A (1999). Economics for the Common Good-Two Centuries of Social Economic Thought in the Humanistic Tradition,Routledge: London.

Shiva Vandana (1998) *Biodiversity. A Third World Perspective*, RFSTE, Navdanya.

Shiva Vandana (1998), *'Towards the Real Green Revolution, RFSTE, Navdanya.*.

Shiva Vandana, Jain Shreya (2011): *The Young Ecologist Imitative, Garden's of Hope Lesson Plan for Cultivating Food Democracy.* RFSTE, Navdanya.

Shiva Vandana, Singh Vaibhav (2011), *Health per acre, Organic Solutions to Hunger and Malnutrition,* Pub. byNavdanya, Research Foundations for Science, Technology and Environment.

Shiva Vandana; Kester Kevin, Jain Shreya (2007): *The Young Ecologist Initiative, Water Manual, Lesson Plans for Building Earth Democracy'.* Pub. by Navdanyas, Research Foundation for Science Technology and Environment/

Thomas Misco and James Shiveley (2010). *Seeing the Forest Through the Trees : Some Renewed Thinking on Dispositions Specific to Social Studies Education".* The Social Studies, Vol. 101, Issue 3, May/June 2010, Routledtge, Taylor and Francis Group.

Walstad,WilliamB,Sopar JohnC.1994.EffectiveEconomic Education in the Schools:Reference and Resource Series.Joint Council on Education and the National Educational Association:New York.

Pedagogy of Commerce

Unit-1 : Commerce Education: Issues and Concerns

- Nature of Commerce and its evolution as an area of study.
- Generation of knowledge in Commerce: Understanding the role of Research, Role of Business institutions, Legal dimensions, Trade practices and Industry.
- Relationship of Commerce with other disciplines such as History, Geography, Law, Psychology, Sociology and Economics.
- Commerce Education in everyday life.

Unit-2 Commerce Curriculum: Issues and Concerns

- Place of Commerce in school curriculum.
- Aims, objectives of teaching Commerce
- Structure of Commerce curriculum.
- Organization of content in Commerce.
- Policy perspectives.
- Analysis of commerce syllabus: focusing on their structure and orgánization of content.

Scanned with CamScanner

Unit-3 : Pedagogy and Assesment in Commerce

- Teaching-learning Process: Lecture, Interaction, Question-Answer technique, Discussion, Seminar, Case Study, Role-Playing, Report-back sessions, Project and Problem solving.
- Planning the Teaching-Learning process: Development of Unit plans and Learning plans.
- Learning Materials: Relevance, selection and use.
- Role of ICT in Commerce Education : Need, function and techniques; E-commerce, E-learning, environments and Commerce pedagogy.
- Related pedagogic issues: Reflective teaching; Inclusion and culturally responsive pedagogy; Action research in commerce classroom.
- Assessment in Commerce: Quantitative techniques of test construction and statistical analysis of test results; Assessment modes: Self-assessment, Peer Assessment, Group Assessment, Learners' profile, Open-book exams, Learners' Portfolio; Enrichment after Assessment.

Suggested Readings:

Afzal, M. (2005). Analytical Study of Commerce Education at Intermediate Level in Pakistan. Doctoral Thesis. University of Punjab, Lahore.

Armitage, A. (2011). Critical Pedagogy and Learning to Dialogue: Towards Reflexive Practice for Financial Management and Accounting Education, *Journal for Critical Education Policy Studies*. 9(2). 104-124.

Bhatia, S.K. (2012). *Teaching of Business Studies and Accountancy*. New Delhi: Arya Book Depot.

Bonk, C.J. and Smith, G.S. (1998). Alternative Instructional Strategies for Creative and Critical Thinking in the Accounting Curriculum. *Journal of Accounting Education*. 16 (2), 261-293.

Carmona, S., Ezzamel, M., Gutiérrez, F. (2004). Accounting History Research: Traditional and New Accounting History Perspectives, Spanish Journal of Accounting History. 1, 24-53.

Cherunilam, F. (2000). *Business Environment*. (11th ed.). New Delhi: Himalaya Publishing House. (Chapter-4: Social Responsibility of Business)

Dymoke, S. and Harrison, J. (Ed.) (2008). Reflective Teaching and Learning. New Delhi: Sage. (Chapter-1: Professional Development and the Reflective Practitioner)

Holtzblatt, M. and Tschakert, N. (2011). Expanding your accounting classroom with digital video technology. *Journal of Accounting Education*. 29, 100-121.

Lal, J. (2002). Accounting Theory. (2nd ed.). New Delhi: Himalaya Publishing House. (Chapter-2 Classification of Accounting Theory.

Mingers, J. and Syed, J. and Murray, P.A. (2009) *Beyond Rigour and Relevance: A Critical Realist Approach to Business Education*. Working paper. University of Kent Canterbury, Canterbury.

National Council of Educational Research and Training (2005). *Position Paper (2.2) National Focus Group on Systemic Reforms for Curriculum Change*. New Delhi: NCERT.

NCERT (n.a.). *In Service Teacher Education Manual for Teachers and Teacher Educators in Commerce (higher secondary stage)*. New Delhi: NCERT.

Wadhwa, T. (2008). Commerce Curriculum at Senior Secondary Level: Some Reflections. *MERI Journal of Education*. III (2), 52-59

Scanned with CamScanner

Pedagogy of Home Science

Unit-1 : Understanding Home Science

- Home Science: concept, components and importance
- Natue and scope of Home science at secondary and higher secondary level
- Study of local, national and international programmes relating to Health, Nutrition, Child Care, Housing, Consumer problems.
- Socially Useful Productive Work related to Home Science

Unit-2 Curriculum of Home Science

- Objectives of teaching Home Science in Schools
- Scope of Home Science in School: Principles of curriculum planning; Critical study of Home Science syllabus and textbooks
- Development of Home Science syllabus.
- Correlation of Home Science with other school subjects

Unit-3 Teaching-learning of Home Science

- Methods of teaching Home Science: Discussion, Demonstration, Laboratory work project, Problem solving, Field trip, Micro-teaching. Use of Community resources in teaching Home Science. Use of mass media in teaching Home Science
- Space and Equipment for Home Science
- Utility of Home science knowledge at school: Study of School lunch programmes; Development of unit in Home Science for adult/ out of school youth, based on needs and interests.
- Teaching Aids in teaching Home Science – audio and visual, Charts, graphs, specimens, samples, short answer tests, score cards, checklist.
- Learning plans for teaching Home Science.
- Evaluation in Home science: Tools and techniques

Suggested Readings:

Gary D. Borich (2013). Effective Teaching Methods: Research-Based Practice (8th Edition) Paperback, Pearson

Asthana N. (2006). Home Science Education: Growth and future prospects(paper) Meri Journal of Education,vol1,no.1, Management Education and Research Institute, Delhi

Chandra,A., Shah,A. & Joshi ,A. (1989). Fundamental of Teaching Home Science. New Delhi. Sterling Publishers Private Limited

Malaviya,R. (2010). Influence of Technology: Adolescent's Interests, Journal of Psychosocial Research, Vol.5 No.1

Malaviya, R. (2007). Evolution of Home Science Education: The Metamorphosis. University News: Journal of Higher Education. Vol. 45, No.08, Feb 19-25, 2007

Scanned with CamScanner

Lady Irwin College (2008). Excellence in Home Science: Contemporary Issues and Concerns, Delhi. Academic Excellence

Lakshmi, K. (2006). Technology of teaching of home science. New Delhi: Sonali Publishers.

Seshaih, P.R. (2004). Methods of teaching home science. Chennai: Manohar Publishers & Distributors.

Nibedita, D.(2004).Teaching of Home Science. New Delhi: Dominant Publishers and Distributers.

Shalool, S. (2002). Modern methods of teaching of home science.(I Edition). New Delhi: Sarup&Sons.

Jha, J.K. (2001). Encyclopaedia of teaching of home science.(Vol I&II), New Delhi: Anmol Publications Private Limited.

Yadav, S. (1997). Teaching of home science.New Delhi: Anmol Publishers.

Yadav, S. (1997). Text book of nutrition and health. New Delhi: Anmol Publishers.

Shah, A. et al (1990). Fundamentals of teaching home science. New Delhi: Sterling Publishers Private Limited.

Bhatia, K.K. (1990). Measurement and evaluation in education. Ludhiana: Prakash Brothers.

Pedagogy of Physics

Unit-1 : Nature of Physics

- A historical perspective: the development of physics as discipline
- The nature of Physics in the senior secondary school curriculum
- Aims and objectives of teaching Physics: Linkages with elementary and secondary level
- Role of experiments in science with particular reference to Physics
- Interface of Physics with mathematics

Unit-2 : Classroom Processes in Physics

- Lecture cum discussion, Problem solving, experimentation, investigatory projet, individually paced programmes, guided independent study, peer learning, seminar presentations, observation based survey
- Physics in daily life of the learners and its utility for enriching classroom learning
- Developing unit and learning plans in Physics
- Assessment of differential skills and processes while learning physics

Unit-3 : Laboratory Organisaton and Experimentation in Physics

- Organisation of physics laboratory: layout and design
- Storage of apparatus
- Maintenance at laboratory records
- Conduct and assessment of laboratory experiments and project work

Suggested Readings:

Bal, V. (2005). *Women scientists in India: Nowhere near the glass ceiling*. Current Science: 88(6). pp. 872-878.

Scanned with CamScanner

Bevilacqua F, Giannetto E.& Mathews M.R. (Ed.) (2001). *Science Education and Culture The Contribution of History and Philosophy of Science* . Netherlands: Kluwer Academic Publishers.

Bowling, J. & Martin, B. (1985). *Science: a masculine disorder?* Science and Public Policy: 12(6). pp. 308-316

Cobern W.W.(Ed.) (1998). *Socio-Cultural Perspectives on Science Education An international Dialogue.* Netherlands: Kluwer Academic Publishers.

Cole, Jonathan R. and Harriet Zuckerman. 1987. "Marriage and Motherhood and Research Performance in Science" Scientific American 256: 119-125.

Hiroko, H. (2012).Modernity, Technology and Progress of Women in Japan: Problems and Prospects. In D. Jain & D. Elson(Ed.), *Harvesting feminist Knowledge for Public policy Rebuilding Progress.* New Delhi :Sage Publication.

Kumar, N. (Ed.)(2009). *Women and Science in India A Reader.* India: Oxford University Press.

Oakes, J. 2007 More than misplaced technology : A normative and political response to Hallinan on tracking in *Sociology of Education* by Alan R. Sadovnik (Ed.). New York: Routledge

Okebukola, O. J. (1991). The Effect of Instruction on Socio-Cultural beliefs Hindering the Learning of Science. *Journal of Research in Science Teaching, 28* (3). pp 275-285.

Osborne, J. F. (1996). Beyond Constructivism. *Science Education, 80* (1). pp 53-82.

Sur, A. (2011). Dispersed Radiance: Caste, Gender and Modern Science in India. Navayana : India

Taylor, P.C. &Cobern W. W. 1998 Towards a Critical Science Education in Socio-Cultural Perspectives on Science Education- An international Dialogue By William W. Cobern (Ed.) Dordrecht: Kluwer Academic Publishers.

Wallace J.& Louden W (Ed.) (2002)*Dilemmas of Science Teaching Perspectives on Problems of Practice.* Routledge: NewYork.

Pedagogy of Chemistry

Unit-1 :Nature of Chemistry and its role in Society

- The nature of Chemistry as a discipline in science, majore landmarks in the development of knowledge in chemistry.
- Chemistry in socio-cultural and historical perspective with focus on social issues and concerns which relate to the role of chemistry in Society
- Contemporary curriculum and syllabus of Chemistry

Unit-2 : Teaching learning Process in Chemistry

- Teaching learning process in chemistry (with reference to the socio-cultural and developmental context of the learner): Problem solving, experementaion, peer learning, seminar presentation
- Simulated teaching and demonstration of activities in chemistry
- Chemistry in daily life of the learners and its utility for enriching classroom learning
- Nature and structure of Learning Plan
- Assessment in Chemistry.

Scanned with CamScanner

Unit-3 : Laboratory and related work in Chemistry

- Organisation of chemistry laboratory: layout and design
- Storage of apparatus and chemicals
- Safety measures in chemistry laboratory
- Conduct and assessment of laboratory experiments and project work

Suggested Readings:

Tobin, K. (Ed.). (1993). The Practice of Constructivism Science Education . Hillsdale, New Jersey: Lawrence Erlbaum Associates, Inc.

Van Driel, J.H.V., Beijaard, D. & Verloop, N. (2001), Professional Development and Reform in Science Education: The Role of Teachers' Practical Knowledge. *Journal of Research in Science Teaching*, 38(2), 137-158, February

Wallace J. and Louden W. (eds.). *Dilemmas of Science Teaching: Perspectives on Problems of Practice.* London: Routledge Falmer. pp. 191-204.

Wang, H. A and Schmidt, W. H. (2001). - History, Philosophy and Sociology of Science in Science Education: Results from the Third International Mathematics and Science Study. In F. Bevilacqua, E. Giannetto, and M.R. Mathews, (eds.). *Science Education and Culture: The Contribution of History and Philosophy of Science*. The Netherlands: Kluwer Academic Publishers. pp.83-102.

Pedagogy of Biology

Unit-1 : Nature and significance of Biology

- Nature of biology as a discipline in science; majore landmarks in the development of knowledge in biology;
- Understanding contemporary issues in relation to biology;
- The changing character of school biology
- The contemporary curriculum and syllabus of Biology

Unit-2 : Curricular and Pedagogic issues in Biology

- Objectives of teaching biological sciences at secondary and senior secondary level;
- Pedagogical practices: problem-solving, peer-learning and seminar presentation;
- Biology in dailiy life of the learners and its utility for enriching classroom learning
- Nature and structure of Learning Plan
- Role of biology teacher in curriculum development and transation

Unit-3 : Laboratory and related work in Biology

- Biology teacher and organization of the Biology Laboratory
- Conduct and assessment of laborartory experiments and project works

Scanned with CamScanner

Suggested Readings:

Collette, Alfred T. and Eugene L. Chappetta, (1994) *Science Education in the Middle and Secondary Schools*; MacMillan : N. Y.

Driver, R., Squires, A., Rushworth, P. and Wood- Robinson, V. (2006) *Making Sense of Secondary Science: Research into Children's Ideas*, London: RoutledgeFalmer.

Eklavya, *BalVigyan – Class 6, 7, 8. (1978) Madhya Pradesh PathyaPustak Nigam*; Bhopal, (English & Hindi Versions both).

Friedrichsen, P.M. & Dana, T. M. (2005). Substantive-Level Theory of Highly Regarded Secondary Biology Teachers' Science Teaching Orientations. Journal of research in science teaching vol. 42, no. 2, pp. 218–244

Lovelock, James (2000) [1979]. Gaia: A New Look at Life on Earth (3rd ed.). Oxford University Press

Minkoff, E. C. & Baker, P. T. (2004) *Biology Today – An Issues Approach* (III Ed.), Garland Science.

Muralidhar, K., '*What Organisms Do?*' *in* Rangaswamy, N. S. (Ed.) *Life and Organism, Vol. XII (Part 6)* in Chattopadhyaya, D. P. (Gen. Ed.). *History of Science, Philosophy and Culture in Indian Civilization*. MunshiramManoharlal Publishers Pvt. Ltd., New Delhi.

Reiss, M. (Ed.). (1999) *Teaching Secondary Biology*. Association for Science Education.

Siddiqi and Siddiqi. (2002) *Teaching of Science Today and Tomorrow*, Doaba Hou. e, New Delhi.

Siddiqi and Siddiqi. *Teaching of Biology*, Doaba House, New Delhi.

Wellington, J. (2004) *Teaching and Learning Secondary Science – Contemporary Issues and Practical Approaches*, London: Routledge.

Wilson, E. O. (1999). Consilience: *The Unity of Knowledge. Vintage Books*, New York.

Pedagogy of Mathematics

Unit-1 : Mathematics: An Introduction

- Meaning, significance and nature of mathematics
- Mathematisation and it domains with reference to children, community and school
- Myth and misconception; children mathematisation and school
- Pedagogic implications of history of mathematics and some research articles/papers
- Critical understanding of significance of mathematical axioms, postulates, propositions, logic, proofs algorithm in mathematisation.
- Aims and objectives of Teaching Mathematics

Unit-2 : Mathematics: Understanding of Pedagogy and curriculum

- Critical understanding of inductive-deductive, analytic-synthetic, laboratory method, problem solving and constructivist approach (Piaget, Vygostky, Dumo, Heile) with special reference to pedagogic implication for mathematics

Scanned with CamScanner

- Critical understanding of mathematics curriculum, syllabus and text books
- Hidden curriculum: In the context of democratizing mathematics classroom and empowering learners' identity (self) in mathematics
- Nature and structure of Learning Plan in Mathematics

Unit-3 : Pedagogical Implication

- Material and situation based activities
- Mathematical kit, mathematical corner, mathematical laboratory.
- School building/space, monuments as learning aids.
- Projects (individual and group) ; concept, planning , enactment and organization
- Issues and possibilities of contextualizing learning-teaching mathematics
- Mathematics teacher: qualities and belongings
- Constructing plan for content/content points and activity

Suggested Readings:

Ball, D. L., & Bass, H. (2003). Making mathematics reasonable in school.In *A research companion to principles and standards for school mathematics* (pp. 27–44).

Ball, D.L., Hill H.C. & Bass, H.(2005). Knowing mathematics for teaching.*American Educator.* Fall 2005.

Bishop, A. J. (1988). The interactions of mathematics education with culture.*Cultural Dynamics, 1*(2), 145–157.

Boaler, J. & Humphreys, C. (2005).Connecting mathematical ideas: Middle school video cases to support teaching and learning (Portsmouth, NH, Heinemann).

Boaler, J. (1993). The role of contexts in the mathematics classroom: Do they make mathematics more"real"? *For the Learning of Mathematics, 13*(2), 12–17.

Boaler, J. (2010). *The elephant in the classroom. Helping children love and learn maths.* Souvenir Press Ltd

Boaler, J. (2013, March). Ability and Mathematics: The mindset revolution that is reshaping education. In *Forum* (Vol. 55, No. 1, pp. 143-52).Symposium Journals.

Burns, M. (2007).*About teaching mathematics: A K–8 resource*, Third Ed. Math Solutions Publications.

Chapin, O'Connor, & Anderson (2009).*Classroom discussions: Using math talk in elementary classrooms.* Math Solutions.

Cirillo, M. (2009).Ten things to consider when teaching proof.*Mathematics Teacher, 103*(4), 250-257.

D'Ambrosio, U. (1985). Ethnomathematics and its place in the history and pedagogy of mathematics.*For the Learning of Mathematics, 5*(1), 44–48.

Scanned with CamScanner

Davis, B. (1995). Why teach mathematics? Mathematics education and enactivist theory. *For the Learning of Mathematics, 15*(2), 2–9.

Davis, B. (2001). Why teach mathematics to all students? *For the Learning of Mathematics, 21*(1), 17–24.

Deborah Ball video on eliciting student thinking, MSRI interview of 6th graders. http://www.msri.org/workshops/696/schedules/16544

Dweck, C.S. (2006). Is math a gift? Beliefs that put females at risk. In W.W.S.J.Ceci (Ed.), *Why Aren't More Women in Science? Top Researchers Debate the Evidence*. American Psychological Association.

Eccles, J & Jacobs, J.E. (1986). Social forces shape math attitudes and performance. *Signs: Journal of Women in Culture and Society, 11*(21), 367-380.

Ernest, P. (2009). New philosophy of mathematics: Implications for mathematics education. In B. Greer, S. Mukhopadhyay, A. B. Powell, & S. Nelson-Barber (Eds.), *Culturally responsive mathematics education* (pp. 43–64). Routledge.

Fuller, E., M Rabin, J., &Harel, G. (2011).Intellectual need and problem-free activity in the mathematics classroom.*Jornal Internacional de Estudosem EducaçãoMatemática, 4*(1).

Greer, B., Mukhopadhyay, S., & Powell, A. B. (Eds.). (2009). *Culturally responsive mathematics education.* Routledge.

Gutstein, E. (2007). "And that's just how it starts": Teaching mathematics and developing student agency. *Teachers College Record, 109*(2), 420–448.

Gutstein, E., Lipman, P., Hernandez, P. & de los Reyes, R. (1997). Culturally relevant mathematics teaching in a Mexican American context, *Journal for Research in Mathematics Education, 28*(6), 709- 737.

Hiebert, J., Carpenter, T., Fennema, E., Fuson, K., Wearne, D., Murray, H. (1997). *Making Sense: Teaching and learning mathematics with understanding.* Portsmouth, NH: Heinemann.

Jackson, K. J., Shahan, E., Gibbons, L., & Cobb, P. (2012).Setting up complex tasks.*Mathematics Teaching in the Middle School*, (January), 1–15.

Kazemi, E. (1998). Discourse that promotes conceptual understanding.*Teaching Children Mathematics, 4*(7), 410- 414.

Kazemi, E., &Stipek, D. (2001).Promoting conceptual thinking in four mathematics classrooms.*The Elementary School Journal, 102*(1), 59–80.

Scanned with CamScanner

Knuth, E., Choppin, J., &Bieda, K. (2009). Proof: Examples and beyond. *Mathematics Teaching in the Middle School, 15*(4), 206-211.

Lampert, M. (2001).*Teaching problem and problems for teaching*.Yale University.

Lockhart, P. & Devlin, K. J. (2009).*A mathematician's lament*. New York: Bellevue Literary Press.

Martino, A.M. & Maher, C. (1999). Teacher questioning to promote justification and generalization in mathematics: What research practice has taught us? *Journal of Mathematical Behavior, 18*(1), 53-78.

MESE-001(2003).Teaching and Learning Mathematics. IGNOU series

Parrish, S. (2014).*Number talks: Helping children build mental math and computation strategies, Grades K-5, Updated with Common Core Connections*. Math Solutions.

Rampal, A., Ramanujam, R. &Saraswathi, L.S. (1999).*Numeracy counts!* and *Zindagikahisaab*(2001). National Literacy Resource Centre, Mussoorie. Available at www.arvindguptatoys.com

Reinhart, S. (2000). Never say anything a kid can say! *Mathematics Teaching in the Middle School, 5*(8), 478-483.

Rousseau, C.,&Tate, W. (2003). No time like the present: Reflecting on equity in school mathematics. *Theory Into Practice, 42*(3).

Schifter, D. (2001). Learning to see the invisible. What skills and knowledge are needed in order to engage with students'mathematical ideas? In T. Wood & B. Scott Nelson & J. Warfield (Eds.), *Beyond classical pedagogy: Teaching elementary mathematics*. Mahwah, (pp. 109-134). NJ: Lawrence Erlbaum Associates

Schoenfeld,A.(2002).Making mathematics work for all children: Issues of standards, testing and equity. *Educational Researcher,31*(1), 13-25.

Skemp, R. (1978). Relational understanding and instrumental understanding. *Arithmetic Teacher26* (3), 1-16.

Smith & Stein (2011).*Five practices for orchestrating productive mathematics discussions.*

Solomon, Y., & Black, L. (2008). Talking to learn and learning to talk in the mathematics classroom. In N. Mercer & S. Hodgkinson (Eds.), *Exploring talk in school* (pp. 73-90)

Timothy Gowers (2002). Mathematics : A Very Short Introduction. Oxford University Press

TIMSS Videos of mathematics classrooms available at: http://www.timssvideo.com/videos/Mathematics

Wheeler D (1983). Mathematisation matters. *For the Learning of Mathematics, 3*(1).

Scanned with CamScanner

Pedagogy of Hindi

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र

इकाई–1 हिन्दी भाषा : स्वरुप तथा विकास का संक्षिप्त इतिहास

- हिन्दी के विकास के विभिन्न काल खंडों से कुछ रचनाओं के उदाहरण चुनकर उनके आधार पर हिन्दी के स्वरुप को समझना
- हिन्दी के स्वरुप को समझने के आधार : विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों में हिन्दी; दृश्य–श्रव्य माध्यमों में उपयोग में लाई जा रही हिन्दी; बी.एड. की कक्षा में उपयोग में लाई जा रही हिन्दी; सामान्य बोल–चाल की हिन्दी।
- उपर्युक्त सभी स्थितियों के आधार पर हिन्दी के वाचिक रूपों की विविधताओं की समझ
- हिन्दी के वाचिक रूपों तथा लिखित रूप/रूपों के बीच अंतःसम्बन्धों की समझ
- संविधान में हिंदी : संविधान में कौन से अनुच्छेद हिन्दी से संबंधित है?
- त्रि–भाषा सूत्र में हिंदी।

इकाई–2 हिंदी–शिक्षण के उद्देश्यों (6–12 कक्षा) तथा पाठ्यपुस्तकों की आलोचनात्मक समझ

- स्कूल में हिंदी : विषय और माध्यम के रूप में।
- बिहार राज्य द्वारा अनुमोदित कक्षा 6–12 के लिए हिंदी के पाठ्यक्रम की समीक्षात्मक समझ।
- एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनुमोदित कक्षा 6–12 के लिए हिंदी के पाठ्यक्रम की समीक्षात्मक समझ।
- उपर्युक्त पाठ्यक्रमों में प्रत्येक स्तर के लिए दिए गए उद्देश्यों में परस्पर तार्किक संगतता की समीक्षा करने की समझ का विकास
- मिडिल, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए भाषा उपयोग की दृष्टि से उपयुक्त पाठों का चयन करने के आधार कौन–कौन से हैं? उदाहरण के लिए; शब्द चयन, वाक्य संरचना (सरल, संयुक्त, या जटिल), पैराग्राफ, तार्किकता वैचारिक जटिलता, शब्द शक्ति, बिंब, प्रतीक, छंद, अलंकार, मुहावरे, लोकोक्ति, सामाजिक–राजनैतिक मूल्य आदि के उपयोगों का स्तर।

इकाई–3 विद्यार्थी–शिक्षकों के लेखन क्षमता का संवर्धन तथा लेखन प्रक्रिया, रूपों, तथा चरणों की समझ

- विद्यार्थी–शिक्षक लिखने, सुनने, कहने तथा पढ़ने के साथ तारतम्यता में देख पाएंगे।
- लिखने के बारे में अपनी समझ का विकास।
- लिखने में शामिल प्रक्रियाओं के बारे में समझ का विकास : जैसे– सोंचना, सुनना, पढ़ना, विचार को मानसिक रूप से व्यवस्थित करना आदि।
- विभिन्न विधाओं में अनुभवों को रचनात्मकता के साथ लिखने की स्वयं की कुशलता का विकास।
- औपचारिक तथा अनौपचारिक अवसरों के लिए लिखने की समझ तथा कुशलता का विकास।
- पठित तथा अपठित सामग्री का संक्षेपण तथा विस्तारण करने की क्षमता का विकास।
- लेखन का मूल्यांकन करने के तरीकों के बारे में समझ बनाना।
- बच्चों में रचनात्मक लेखन का विकास करने के तरीकों तथा प्रक्रियाओं के बारे में समझ बनाना।

इकाई–4 साहित्य एवं साहित्यिक विधाएँ : समझ और शिक्षण

- साहित्य क्या है?
- साहित्य को समझने के लिए साहित्यिक तत्वों (शब्द शक्ति, बिंब, प्रतीक, छंद, अलंकार, मुहावरे, लोकोक्ति आदि) की समझ तथा उनका शिक्षण में उपयोग।
- बिहार राज्य में कक्षा 6–12 के लिए हिंदी की पाठ्य पुस्तकों में दी गयी विधाओं की विशेषताओं की समझ।

Scanned with CamScanner

- उपर्युक्त विधाओं की समझ के आधार पर शिक्षण में उनके उपयोग की समझ।
- बिहार राज्य में कक्षा 6–12 के लिए हिंदी और पाठ्यक्रम में दिए गए व्याकरणिक तत्वों के बारे में समझ।
- उपर्युक्त व्याकरणिक तत्वों का संदर्भानुसार शिक्षण करने की समझ।
- हिंदी–शिक्षण में व्याकरण का महत्व।
- व्याकरण और भाषा के अंर्तसंबंधों की समझ।

इकाई–5 हिन्दी : शिक्षणशास्त्र एवं आकलन

- शिक्षण क्या है? (बुनियादी पर्चों के आधार पर बनी समझ का हिन्दी–शिक्षण में उपयोग)।
- हिन्दी शिक्षण के विभिन्न उपागम।
- हिन्दी के सीखने–सिखाने को कक्षा सम्बन्धों, बहुभाषिकता, लोकतांत्रिक कक्षा, कक्षा प्रक्रियाओं आदि के संदर्भ में समझना।
- उपर्युक्त के आधार पर हिन्दी–शिक्षण के लिए उपयुक्त विधियों का चुनाव तथा सृजन।
- हिन्दी–शिक्षण हेतु रणनीतियां एवं 'सीखने की योजना' : शिक्षण–पूर्व, शिक्षण करते हुए व शिक्षण–पश्चात।
- रचनात्मक तथा आलोचनात्मक उपागमों के साथ–साथ व्यवहारवादी उपागमों के बारे में आलोचनात्मक समझ।
- एक से अधिक विधियों का उपयोग करने की संभावनाओं के बारे में समझ।
- कक्षा में जाने से पहले कक्षा प्रक्रियाओं के संदर्भ में की जाने वाली तैयारी के बारे में समझ।
- कक्षा में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं के बारे में समझ।
- कक्षा में भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक शिक्षण–साधनों के उपयोग के बारे में समझ।
- हिन्दी शिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन का अर्थ : समग्र मूल्यांकन; मिडिल, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में सतत एवं समग्र मूल्यांकन के उपयोग के बारे में समझ।

संदर्भ–ग्रंथ

- अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन (2010) वत्सल निधि प्रकाशन माला : संवित्ति, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली
- कुमार (2010) वत्सल निधि प्रकाशन माला : संवित्ति, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली
- कौशिक, जयनारायण (1987), हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
- गुप्ता, मनोरमा (1984), भाषा अधिगम, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार (1990), साहित्य भाषा और साहित्य शिक्षण, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार एवं शुक्ल देवेन्द्र (1992) साहित्य शिक्षण, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, मद्रास
- चतुर्वेदी, रामस्वरुप (2005) हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
- जोसेफ जेस्सी (1997), भाषा की जैविकता, ज्ञानोदय प्रकाशन, धारवाड़
- तिवारी, पुरुषोत्तम (1992) हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
- तिवारी, भोलानाथ (1990) हिन्दी भाषा शिक्षण, लिपि प्रकाशन, दिल्ली
- पाण्डेय, रामशकल (1993), हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- पांडेय हेमचन्द्र (2001), भाषिक सम्प्रेषण और उसके प्रतिदर्श
- प्रसाद, केशव (1976), हिन्दी शिक्षण धनपत राय एंड संस, दिल्ली
- बाग्रेतिया हीरलाल (2011), हिन्दी शिक्षण: संकल्पना और प्रयोग, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
- नागोरी, शर्मा एवं शर्मा (1976) हिन्दी भाषा एवं साहित्य शिक्षण, राजस्थान प्रकाशन
- लहरी, रजनीकांत (1975) हिन्दी शिक्षण, राम प्रसाद एंड संस, आगरा

Scanned with CamScanner

- व्यागात्सकी (2009), विचार और भाषा (अनु.) ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली
- श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ (2009), भाषाई अस्मिता और हिंदी वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- शर्मा रामविलास (1978), भारत की भाषा समस्या, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- सिंह, निरंजन कुमार (1981), माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
- सुरेशकुमार (2001), शैलीविज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Pedagogy of English

Unit-1 Basic concepts about English as Second Language

- Concept of language, language acquisition, language-learning
- Concept of Mother Tongue and Second Language
- Principles of Second Language Teaching: English as a Second language (ESL); psychological factors affecting second language learning, problem of effective teaching
- The function of second languages in a multilingual society: The context of India with special focus on Bihar

Unit-2 Pedagogy for teaching Engish

- Direct Method and Bilingual Method; Role play-simulation and group work
- Computer Assisted language Learning (CALL) and Computer assisted language teaching (CALT)
- Second language teaching: Structural situational approach, Communicative approach, Constructivism approach, Eclectic approach
- Teaching Aids in English: Text book, Work book, Reference book, Newspaper/magazines, Chart, pictures, flash cards, Pannel board, black board, Tape-recorder, Radio, OHP, Computer, Substitution tables, Language lab, Authentic materials
- Pedagogical methods and approache for teaching poetry, prose and grammar in English
- Learning Plan for English: Nature and structure

Unit-3 Developing Teaching skills in English

- Teaching of listening skills: Concept of listening in second language, Difference between hearing and listening, Difference between listening and listening comprehension, Techniques of teaching listening, Note taking
- Teaching of speaking skills: Concepts of speaking in second language, Organs of speech elements, Use of pronouncing dictionary phonetic transcription, teaching speaking skills and pronunciation, Role of Audio Visual aids and drills, Language games
- Concept of reading in second language: Mechanics of reading (silent, aloud, intensive and extensive, Using Dictionary), Maze method; Scanning, skimming, inferences and extrapolation; Top, down and bottom up; Language games; Role of speed and pace
- Concept of writing: Types of Composition (Oral, Written, Controlled, Guided, Free, Contextualized and integrated composition), Developing stories

Unit-4 English: Understanding Curriculum, Textbooks and Assessment

- Understanding curriculum of Engish at school level: content analysis, review of syllabus and textbooks

Scanned with CamScanner

- English Textbooks: New Lexical items (Vocabulary), New Structural items, Textual Exercises, Reading comprehension, Writing composition, Unit test
- Assessment and Evaluation in English: CCE; Self-evaluation, peer evaluation
- Concept of testing in English as a second language
- Testing language skills, lexical, structure items, poetry, prose and grammar.
- Difference in testing in content subjects and skill subjects
- Error analysis; Concept of remedial teaching and re-material

Suggested Readings:

Doff, A. (1988) Teach English. CUP : Cambridge.

Morgan J. & Rinvolucri M. (1986). Vocabulary, OUP : Oxford.

Hayes, B.L. (ed) (1991). Effective Strategies for Teaching Reading. Allyn & Bacon.

Grellet, F. (1981). Developing Reading Skills, CUP : Cambridge.

Nutall, Chrishrine (1987) Teaching Reading Skills in a Foreign Language. London : Heinemann Educational Books Ltd.

Parrott, M. (1993). Tasks for Language Teachers. Cambridge : CUP.

Richards & Lockhart (1994) Reflective Teaching in Second Language Classrooms. Cambridge: CUP.

Hughes, A. (1989). Testing for Language Teachers Cambridge : CUP.

Nunan, D. and C. Lamb (1996). The Self-directed Teacher : Managing the Learning Process. Cambridge: CUP.

Weir, C. J. (1993). Understanding and Developing Language Texts. London's Prentice Hall.

Asher, R. E. (ed.) (1994). The Encyclopedia of Language and Linguistics.

Hedge,T.(1998). Writing : Resource Book for Teachers. Oxford : OUP.

Bygate, M. (1987). Speaking : Oxford: OUP.

Kuppel, F. (1984). Keep Talking : Communicative Fluency Activities for Language Teaching. Cambridge : CUP.

Littlewood, W. (1992). Teaching Oral Communication. Oxford : Blackwell Publishers.

Nunan, D. (1989). Designing Tasks for the Communicative Classroom. Cambridge : CUP.

Anderson & Lynch (1988). Listening. Oxford: OUP.

Brumfit, C. (ed.) (1983). Teaching Literature Overseas : Language – Based Approaches, ELT Document : 115, Oxford : Pegamon.

Brumfit and Carter (1986). Literature and Language Teaching : Oxford : OUP.

Underhill, N. (19870. Testing Spoken Language : Cambridge : CUP.

Ur, P. (1991). Discussions that work. Cambridge : CUP.

Ur,P. (2014). A Training Course in Teaching of English. CUP: Cambridge

Richards and Rodgers (1986). Approaches and Methods in Language Teaching. Oxford : OUP.

Prabhu, N. S. (1987). Second Language Pedagogy. Oxford : OUP.

Agnihotri & Khanna (eds.) (1991). Second Language Acquisition. New Delhi : Sage.

Stern, H. H. (1983). Fundamental Concepts of Language Teaching. Oxford : OUP.

Scanned with CamScanner

Pedagogay of Sanskrit
संस्कृत का शिक्षणशास्त्र

इकाई–1 संस्कृत की प्रकृति, उद्देश्य एवं पाठ्यचर्या की समझ

- संस्कृत की प्रकृति एवं विषेषताएं
- संस्कृत भाषा की संरचनागत विषेषताएं
- संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य की समझ : बिहार राज्य द्वारा अनुमोदित कक्षा 6–12 का पाठ्यक्रम; एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनुमोदित संस्कृत पाठ्यक्रम; प्रत्येक स्तर पर दिए गए उद्देश्यों में परस्पर तार्किक संगतता
- स्कूली पाठ्यचर्या में संस्कृत का स्थान
- कक्षा शिक्षण में संस्कृत के आंचलिक भाषा के साथ संबंध

इकाई–2 विद्यार्थी–शिक्षकों में संस्कृत लेखन, पठन तथा वाचन क्षमता का संवर्धन

- लिखने, सुनने, कहने तथा पढ़ने के साथ तारतम्यता में देख पाने की समझ का विकास : चिन्तन, सुनना, पढ़ना, मानसिक रूप में व्यवस्थित करना।
- विभिन्न विधाओं में अपने अनुभवों को रचनात्मकता के साथ लिखने की कुशलता विकसित करना।
- स्वयं के लेखन का मूल्यांकन करने के तरीकों के बारे में समझ बनाना।
- विद्यार्थी–शिक्षकों में रचनात्मक लेखन को विकासित करने के तरीकों तथा प्रक्रियाओं के बारे में समझ विकसित करना।

इकाई–3 संस्कृत साहित्य एवं व्याकरण शिक्षण

- संस्कृत साहित्य : श्लोक (पद्य), गद्य (निबंध, नाटक आदि)
- कक्षा 6–12 के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तकों में दी गई विधाओं की समझ एवं शिक्षण।
- व्याकरण शिक्षण की विविध विधियाँ एवं नवाचार : संस्कृत शिक्षण में व्याकरण का महत्त्व; कक्षा 6–12 के लिए संस्कृत के पाठ्यक्रम में दिए गए व्याकरणिक तत्वों के बारे में समझ; व्याकरणिक तत्वों का संदर्भानुसार शिक्षण करने की समझ
- संस्कृत व्याकरण और भाषा के अन्तर्संबंधों की समझ।

इकाई–4 संस्कृत शिक्षण, कक्षा प्रक्रिया एवं आकलन के तरीके

- श्रवण कौशल एवं इसके विकास की विधियाँ
- पठन कौशल एवं पठन कौशल के विकास की विधियाँ, समस्याएँ एवं निदान
- लेखन कौशल की विभिन्न विधियाँ
- वाचन कौशल (मौखिक अभिव्यक्ति)
- संस्कृत शिक्षण : रचनात्मक तथा अन्य उपागमों के बारे में आलोचनात्मक समझ।
- कक्षा शिक्षण रणनीतियाँ एवं 'सीखने की योजना': शिक्षण पूर्व, शिक्षण करते हुए तथा शिक्षण पश्चात्।
- संस्कृत शिक्षण में, आकलन एवं मूल्यांकन : संकल्पना एवं अवधारणा, विभिन्न विधाओं का मूल्यांकन, प्रश्न–पत्र निर्माण कला, संस्कृत के शिक्षण में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन के उपयोग के बारे में समझ।

संदर्भ सामग्री

- आप्टे, डी. जी, 1960 : टीचिंग ऑफ संस्कृत इन सेकेण्ड्री स्कूल्स, आचार्य बुक डिपो, बड़ोदा
- त्रिपाठी, राधाबल्लभ 1999 : संस्कृत साहित्य; 20वीं शताब्दी, राष्ट्रीय –संस्कृत–संस्थानम्, नई दिल्ली
- शर्मा, नन्दराम, 2007 : संस्कृत–शिक्षण, साहित्य चन्द्रिका, प्रकाषन, जयपुर

Scanned with CamScanner

Pedagogay of Bhojpuri
भोजपुरी का शिक्षणशास्त्र

इकाई–1 भोजपुरी भाषा की प्रकृति, उद्देश्य एवं पाठ्यचर्या की समझ

- भोजपुरी की प्रकृति एवं विशेषताएं
- भोजपुरी भाषा की संरचनागत विशेषताएं
- भोजपुरी शिक्षण के उद्देश्य की समझ : बिहार राज्य द्वारा अनुमोदित पाठ्यक्रम तथा प्रत्येक स्तर पर दिए गए उद्देश्यों में परस्पर तार्किक संगतता
- स्कूली पाठ्यचर्या में भोजपुरी भाषा का स्थान
- कक्षा शिक्षण में भोजपुरी भाषा के आंचलिक भाषा के साथ संबंध

इकाई–2 विद्यार्थी–शिक्षकों में भोजपुरी लेखन, पठन तथा वाचन क्षमता का संवर्धन

- भोजपुरी भाषा में लिखने को, सुनने, कहने तथा पढ़ने के साथ तारतम्यता में देख पाने की समझ का विकास : चिन्तन, सुनना, पढ़ना, मानसिक रूप में व्यवस्थित करना।
- विभिन्न विधाओं में अपने अनुभवों को रचनात्मकता के साथ लिखने की कुशलता विकसित करना।
- भोजपुरी में स्वयं के लेखन का मूल्यांकन करने के तरीकों के बारे में समझ बनाना।
- भोजपुरी में विद्यार्थी–शिक्षकों के रचनात्मक लेखन को विकसित करने के तरीकों तथा प्रक्रियाओं के बारे में समझ विकसित करना।

इकाई–3 भोजपुरी साहित्य एवं व्याकरण शिक्षण

- भोजपुरी साहित्य की समझ
- भोजपुरी के पाठ्यपुस्तकों में दी गई विधाओं की समझ एवं शिक्षण।
- व्याकरण शिक्षण की विविध विधियाँ एवं व्यवहार : भोजपुरी शिक्षण में व्याकरण का महत्व; भोजपुरी के पाठ्यक्रम में दिए गए व्याकरणिक तत्वों के बारे में समझ; व्याकरणिक तत्वों का संदर्भानुसार शिक्षण करने की समझ
- भोजपुरी व्याकरण और भाषा के अन्तर्संबंधों की समझ।

इकाई–4 भोजपुरी शिक्षण, कक्षा प्रक्रिया एवं आकलन के तरीके

- श्रवण कौशल एवं इसके विकास की विधियाँ
- पठन कौशल एवं पठन कौशल के विकास की विधियाँ, समस्याएँ एवं निदान
- लेखन कौशल की विभिन्न विधियाँ
- वाचन कौशल (मौखिक अभिव्यक्ति)
- भोजपुरी शिक्षण : रचनात्मक तथा अन्य उपागमों के बारे में आलोचनात्मक समझ।
- कक्षा शिक्षण रणनीतियाँ तथा 'सीखने की योजना' : शिक्षण पूर्व, शिक्षण करते हुए तथा शिक्षण पश्चात्।
- भोजपुरी शिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन : संकल्पना एवं अवधारणा, विभिन्न विधाओं का मूल्यांकन, प्रश्न पत्र निर्माण कला, संस्कृत के शिक्षण में सतत एवं समग्र मूल्यांकन के उपयोग के बारे में समझ।

Pedagogy of Maithili
मैथिलीक शिक्षणशास्त्र

इकाई–1 मैथिली विभिन्न रूप तथा मैथिलीक विकासक संक्षिप्त इतिहास ओ मैथिली सीखन–सिखएबाक लेल ओकर महत्व

- विभिन्न काल खण्ड सँ किछु रचनाकेँ उदाहरण स्वरूप चुनिकऽ मैथिलीक स्वरूपकेँ बूझब।
- विभिन्न पत्र–पत्रिकामे प्रयुक्त मैथिलीक रूपकेँ बूझब।

Scanned with CamScanner

- बी.एड. कक्षाक विद्यार्थी–शिक्षक द्वारा प्रयुक्त मैथिलीक आधार पर मैथिलीक स्वरूप कें बूझब।
- मैथिलीक विकासक इतिहासक आधार पर मैथिलीक स्वरूपकें बूझब।
- उपर्युक्त सभ बिन्दुकें मैथिली सीखब–सिखएबाक (विद्यार्थी–शिक्षक सम्बन्ध, बहुभाषिकता, लोकतान्त्रिक कक्षा, कक्षा–प्रक्रिया आदि) क संदर्भ में बूझब।
- मैथिलीक वाचिक रूपक विविधताकें बूझब।
- मैथिलीक वाचिक ओ लिखित रूपक अन्तर्सम्बन्ध के बूझब।
- संविधानमे मैथिली

इकाई–2 मैथिली शिक्षणक उद्देश्य तथा पाठ्यपुस्तक आलोचनात्मक समझ

- स्कूली पाठ्यचर्या मे मैथिलीक स्थान : मैथिली विषय ओं माध्यम भाषाक रूपमे
- विद्यार्थी–शिक्षक बिहार राज्य द्वारा अनुमोदित कक्षा 6 सँ 12 मैथिलीक पाठ्यक्रम समीक्षात्मक समझ बना सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक पाठ्यक्रममे प्रत्येक स्तर-हेतु देल गेल उद्देश्य में परस्पर तार्किक संगतताक समीक्षा करबाक क्षमता पाबि सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक ई बुझि सकताह जे उच्च प्राथमिक (6–8), माध्यमिक (9–10) ओ उच्चतर माध्यमिक (11–12) कक्षा कलेल उपयुक्त पाठ्यवस्तुक चयन करबाक आधार कोन–कोन अछि (यथा– शब्द, वाक्य संरचना, अनुच्छेद, तार्किकता, वैचारिक जटिलता, कहबी (लोकोक्ति), मुहावरा, अलंकार, छन्द आदि)

इकाई–3 लिखबाक क्षमताक संवर्द्धन ओं लिखबाक प्रक्रियाक बारेमे समझ

- विद्यार्थी–शिक्षक सुनब, कहब तथा पढ़बाक संग 'लिखबाक' तारतम्यता कें बूझि सकताह, जेना–चिन्तन, सुनब, पढ़ब, मानसिक रूपसँ व्यवस्थित करब आदि।
- विद्यार्थी–शिक्षक विभिन्न विधामे अपन अनुभवकें रचनात्मकता संग लिखबाक कौशल विकसित कऽ सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक लिखबाक मूल्यांकन हेतु विभिन्न तरीकाक बारेमे बूझि सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक छात्रमे रचनात्मक लेखन क विकास करबाक तरीका ओ प्रक्रियाक बारेमे बूझि सकताह।

इकाई–4 मैथिली साहित्य ओ व्याकरण : समझ ओं शिक्षण

- साहित्यय क अर्थ
- शब्द–शक्तिक सामर्थ्य कें बूझब ओं ओकर शिक्षणमे उपयोग
- विद्यार्थी–शिक्षक बिहार राज्य में कक्षा 6–12 घरिलेल मैथिलीक पाठ्यपुस्तकमे देल गेल विधासमक विशेषतासँ अवगत भऽ सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक उपर्युक्त विधा समकें बूझि शिक्षणमे ओकर उपयोग करबाक ऊहि (समझ) पाबि सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक बिहार राज्य में कक्षा 6–12 लेल अनुमोदित मैथिली पाठ्यक्रममे देल गेल व्याकरणिक तत्वक विषयमे बूझि सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक उपर्युक्त व्याकरणिक तत्वकें संदर्भानुसार शिक्षण करबाक योजना बना सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक ई बूझि सकताह जे मैथिली शिक्षणमे व्याकरणक की महत्व अछि ?
- विद्यार्थी–शिक्षक व्याकरण ओं भाषाक अन्तर्सम्बन्धक समझ बना सकताह।

इकाई–5 मैथिली : शिक्षण, कक्षा प्रक्रिया ओं मूल्यांकन

- शिक्षण समझ ओं शिक्षण विधिक चुनाव
- शिक्षण रणनीति ओं 'सीखने की योजना': शिक्षण पूर्व, शिक्षण काल ओ शिक्षण बाद
- एहि इकाई मे विद्यार्थी–शिक्षक रचनात्मक तथा आलोचनात्मक उपागम संग व्यवहारवादी उपागमक विषयमे आलोचनात्मक समझ बना सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक एकसँ अधिक शिक्षण विधिक उपयोग करबाक सम्भावना पर विचार कऽ सकताह।
- कक्षा–प्रक्रियाक संदर्भ मे कएल जएबाक तैयारीक सम्बन्धमे बूझि सकताह।

Scanned with CamScanner

- कक्षामे भौतिक ओं मनोवैज्ञानिक शिक्षण–साधनक उपयोग करबाक बारेमे सोचि सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक सतत मूल्यांकनक अवधारणा बूझि सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक समग्र मूल्यांकनक बारेमे बूझि सकताह।
- विद्यार्थी–शिक्षक मैथिलीक शिक्षणमे सतत ओं समग्र मूल्यांकनक उपयोगक विषयमे जानि सकताह।

संदर्भ सामग्री :

- श्रीष. दुर्गानाथ झा (1991½. मैथिली साहित्यक इतिहास. दरभंगा : भारती पुस्तक केन्द्र.
- झा. दिनेश कुमार (1989½. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास. पटना : मैथिली अकादमी.
- झा. षक्ति घर (1986½. मैथिलीक स्वरूप विधान. पटना : मैथिली अकादमी.
- वासुकीनाथ झा (2006½. मैथिली साहित्यक रूपरेखा. पटना : चेतना समिति.
- गोविन्द झा (2008½. मैथिली भाषा का विकास. बिहार : हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.

Pedagogy of Bengali
बंगाली का शिक्षणशास्त्र

Unit-1 Nature, Scope and Aims

- The place and importance of the mother tongue in life and education.
- Aims and objectives of teaching the mother tongue.
- Principles and methods to be followed in different school stages for Bengali teaching.
- Need for professional orientation of a teacher in Bengali
- Study of the Prescribed courses in Bengali in Secondary and Higher Secondary classes in Bihar

Unit-2 The development of Bengali Literature

- The origin and development of Bengali Prose- importance of Vidyasagar, Bankim Chandra
- The origin and development of Bengali Novel and Short stories – Importance of Bankim Chandra, Rabindranath Tagore and Sarat Chandra.
- The origin and development of Bengali drama – Madhusudan ,Dinabandhu, Girish Ghosh
- The origin and development of Modern Bengali Poetry- importance of Madhusudan Dutta, Biharilal Chakravorty, Rabindranath.
- Characteristics of Bengal Renaissance or Nava jagran in 19th century and its influence on literature and life of Bengal.
- Brief history of Bengali Language – Origin and development upto Magadhi Prakrit stage. Bengali shabda bhandar.

Unit-3 Bengali speaking, reading and writing

- Influence of local dialects on speech habits
- The importance of the study of the phonetics for language teachers-reading loud, silent, intensive and extensive.
- Qualities of good reading.
- Qualities of good hand writing.

Scanned with CamScanner

- Problems of Bengali speaking.
- Causes of Bengali spelling mistakes and corrective measures.

Unit-4 Bengali: Curriculum, Pedagogy and Assessment

- Methods of teaching different areas – Prose, Poetry, essay writing, grammar and composition
- Teaching aids – aims and utility – classifications and their uses.
- Learning plan for Bengali: nature and structure
- Test and Evaluation : Planning of unit test and achievement test in Bengali: Objectives and Evaluation in Bengali teaching and importance of feed-back; Preparation of achievement test in Bengali—oral and writing in Bengali; Evaluation of creative writing in Bengali.
- Literary activities: Recitation, Debates, Lecture, Music, Dance, Drawing and Painting; Little magazine and wall magazines; Literacy discussion and acting drama

Pedagogy of Urdu
उर्दू शिक्षणशास्त्र

Unit-1 Nature, Scope and Aims

- Language- its meaning and functions. The role of mother-tongue in the education of a child.
- Special features of Urdu language and its universal significance- the cultural, practical, literary and linguistic.
- Aims and objectives of Teaching Urdu as mother-tongue.
- The principles of the development of curriculum with special reference to Urdu.
- The place of Urdu in school curriculum with special reference to B.S.E.B.
- Development of Urdu language in India with special focus on Bihar

Unit-2 Understanding pedagogy of Urdu

- General principles of language teaching with special reference to Urdu as mother-tongue.
- Problems of teaching the mother-tongue.
- Making Learning Plan for Urdu: Nature and structure
- Skills of Teaching: basic skills, Core skills and planning micro-lessons for their development.
- Methods of teaching Urdu for Non-Urdu speaking people.
- Teaching Aids: Blackboard, Picture, Chart and Map, Models, Flash cards, Puppets, Magnetic board, Radio, Tape-recorder, Television, Video, Overhead projector, LCD projector, Gramophone and lingua phone, Computer Assisted Urdu language learning.
- Language laboratory and it's importance in the teaching of Urdu Language.

Unit-3 Specific Instructional Strategies

- Teaching of Prose; Dastan, Afsana, Novel, Drama, Sawanih, Makateeb and Insha. Major steps in the planning of a prose lesson.
- Teaching of Poetry-Nazam, Ghazal and Rubaee; Objectives of poetry lesson. Importance of recitation, Major steps in a poetry plan.
- Teaching of Grammar: Place of grammar in the teaching of Urdu, Inductive and Deductive methods and their relative merits.

Scanned with CamScanner

- Teaching of Reading: Attributes of good reading, Types of reading; Scanning, Skimming, Intensive reading, Extensive reading, Silent reading, reading aloud. Various methods of reading; The phonic method, alphabetical method, word method and sentence method.
- Concept and types of Evaluation.
- Concept and Components of Continuous Comprehensive Evaluation (CCE).
- Characteristics of a good test.
- Construction of achievement test in Urdu with Essay type, Short answer type and Objective type items.
- Ways of testing reading, writing, speaking, grammar and vocabulary.
- Qualities of an Urdu Teacher- an evaluative approach.

Suggested Readings:

Ather Farouqui, Urdu Education in India: Four Representative StatesEconomic and Political Weekly Vol. 29, No. 14 (Apr. 2, 1994), pp. 782-785

Reflections on Teaching Urdu in GermanyChristina OesterheldEconomic and Political WeeklyVol. 37, No. 2 (Jan. 12-18, 2002), pp. 112-115

Minorities, Education and Language: The Case of UrduHasan AbdullahEconomic and Political WeeklyVol. 37, No. 24 (Jun. 15-21, 2002), pp. 2288-2292

A History of Urdu Literature. Second Edition, Revised and Enlarged. by Muhammad Sadiq

Trouble over Urdu and ArabicMukundan C. MenonEconomic and Political WeeklyVol. 15, No. 35 (Aug. 30, 1980), pp. 1467-1468

Perspectivs on Urdu Language and Education in India, Mazhar Hussain., Social ScientistVol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 1-4

Linguistic Diversity in Global Multicultural Civic Politics: The Case of Urdu in India, Jagdish S. Gundara Social ScientistVol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 38-56

Urdu Language and Education in India, David J. Matthews, Social ScientistVol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 57-72

The Appeal of Urdu: Its Significance and Potential. Daniel Gold. Social ScientistVol. 31, No. 5/6 (May - Jun., 2003), pp. 73-79

Abdullah, Saleem. Urdu Kaise Parhaen, Aligarh: Educational Book House.

Alderson, C. (2000). Assessing Reading, New York: Cambridge UniversityPress.

Bachman, L. and A. Palmer.(1996). Language Testing in Practice, New York:Oxford University Press.

Beg, Mirza Khalil. Urdu Zaban Ki Tareekh, Aligarh: Educational Book House.

Brown, H. D. (2007). Principles of Language Learning and Teaching, 5th Edition, white Plain, New York: Pearson Education Inc.

Buck, G. (2001). Assessing Listening, New York: Cambridge University Press.

Douglas, D. (2000). Assessing Language for Specific Purposes, New York: Cambridge University Press.

Lado, R. (1983). Language Teaching: A Scientific Approach, New Delhi: McGraw Hill.

Larsen-Freeman, D. (2000). Techniques and Principles in Language Teaching, 2nd ed. New York: OxfordUniversity Press.

Littlewood, W. (1981). Language Teaching: An Introduction, Cambridge: Cambridge University Press.

McNamara, T. (2000). Language Testing, New York: Oxford University Press.

Scanned with CamScanner

Moinuddin. (2002). Urdu Zaban Ki Tadrees, New Delhi: NCPUL.

Quazi, Shahbaz & Akhtar, Muhammad Naeem (2007). Urdu Tadreesi Tareeqa, Nagpur: Authors.

Read, J. (2000). Assessing Vocabulary, New York: Cambridge University Press.

Richards, J. C. (2001). Curriculum Development in Language Teaching, New York: Cambridge University Press.

Richards, J. C. and T. S. Rodgers. (2001). Approaches and Methods in Language Leaching, 2nd ed. New York: Cambridge University Press.

Sherwani, Inamullah Khan (1989). Tadrees Zaban-e-Urdu, Kolkata: Anjali Ghose.

Subbiah, Pon (2003). Test of Language Proficiency: Urdu, Mysore: Central Institute of Indian Languages. Tabassum, Razia Aamozish-e-Urdu, Patna: Author.

Weigle, S. (2002). Assessing Writing, New York: Cambridge University Press.

Woodward, T. (2001). Planning Lessons and Courses: Designing Sequences of Work for the Language Classroom, New York: Cambridge University Press.

Pedagogy of Arabic
अरबी का शिक्षणशास्त्र

Unit-1 Nature, Scope and Aims

- Language- its meaning and functions. The role of mother-tongue in the education of a child.
- Special features of Arabic language and its universal significance- the cultural, practical, literary and linguistic.
- Aims and objectives of Teaching Arabic as a foreign language
- The principles of the development of curriculum with special reference to Arabic.
- The place of Arabic in school curriculum with special reference to B.S.E.B.
- Development of Arabic language in India with special focus on Bihar

Unit-2 Understanding pedagogy of Arabic

- General principles of language teaching with special reference to Arabic as mother-tongue.
- Problems of teaching the mother-tongue.
- Making Learning Plan for Arabic: Nature and structure
- Skills of Teaching: basic skills, Core skills and planning micro-lessons for their development.
- Methods of teaching Arabic for Non-Arabic speaking people.
- Teaching Aids: Blackboard, Picture, Chart and Map, Models, Flash cards, Puppets, Magnetic board, Radio, Tape-recorder, Television, Video, Overhead projector, LCD projector, Gramophone and lingua phone, Computer Assisted Arabic language learning.
- Language laboratory and it's importance in the teaching of Arabic Language.

Unit-3 Specific Instructional Strategies

- Teaching of Prose; Maqamah, Qissah (story)and Riwayah (Novel), Major steps in the planning of a prose lesson.
- Teaching of Poetry-Tashbeeb, Ghazal, Madah, Heja, Rasa and Fakhra; Objectives of poetry lesson, Importance of recitation, Major steps in a poetry plan.
- Teaching of Grammar: Place of grammar in the teaching of Arabic, Inductive and Deductive methods and their relative merits.

Scanned with CamScanner

- Teaching of Reading: Attributes of good reading, Types of reading; Scanning, Skimming, Intensive reading, Extensive reading, Silent reading, reading aloud. Various methods of reading: The phonic method, alphabetical method, word method and sentence method.
- Teaching of vocabulary - Its ways and means.
- Teaching of writing and composition: Letter writing, Essay writing and Precis writing.
- Other literary activities in Arabic: Elegant writing, Musabiqah-al-Abyat, MutahiratunShe'riah.

Unit-4 **Evaluation Techniques**

- Concept and types of Evaluation.
- Concept and Components of Continuous Comprehensive Evaluation (CCE).
- Characteristics of a good test.
- Construction of achievement test in Arabic with Essay type, Short answer type and Objective type items.
- Ways of testing reading, writing, speaking, grammar and vocabulary.
- Qualities of an Arabic Teacher- an evaluative approach.

Suggested Readings:

- Alderson, C. (2000). Assessing Reading, New York: Cambridge UniversityPress.
- Al-Naqa, Mahmum K. (1978). Asasiyat Talim-al-Lugha-al Arabic Li Ghairal- Arabic, ALESCO, Khartoum (Sudan), International Institute of Arabic Language.
- Bachman, L. and A. Palmer.(1996). Language Testing in Practice, New York: OxfordUniversity Press.
- Bailey, K. (1997). Learning About Language Assessment: Dilemmas, Decisions, and Directions, Boston: Heinle & Heinle.
- Brown, H. D. (2007). Principles of Language Learning and Teaching, 5th Edition, white Plain, New York: Pearson Education Inc.
- Buck, G (2001). Assessing Listening, New York: Cambridge University Press.
- Douglas, D. (2000). Assessing Language for Specific Purposes, New York: Cambridge University Press.
- Khan, Muhammad SharifArbi Kaise Parhaen, Aligarh: Educational Book House.
- Lado, R. (1983). Language Teaching: A Scientific Approach, New Delhi: McGraw Hill
- Larsen-Freeman, D. (2000). Techniques and Principles in Language Teaching, 2nd ed. New York:
- OxfordUniversity Press.
- Littlewood, W.(1981). Language Teaching: An Introduction, Cambridge: Cambridge University Press.
- McNamara, T. (2000). Language Testing, New York: Oxford University Press.
- Nadvi, A.H. (1989). Arabi Adab Ki Tareekh, New Delhi: NCPUL.
- Read, J. (2000). Assessing Vocabulary, New York: Cambridge University Press.
- Richards, J. C. (2001). Curriculum Development in Language Teaching, New York: Cambridge University Press.

Scanned with CamScanner

- Richards, J. C. and T. S. Rodgers (2001). Approaches and Methods in Language Teaching, 2nd ed. NewYork: Cambridge University Press.
- Rivers, W.M. (1968). Teaching Foreign Language skills, Chicago University Press.
- Samak, S.M. (1975). Fan-al-Tadris-bil-Lugha-al Arabic, Cairo: Al- Anglo- Misriya.
- Weigle, S. (2002). Assessing Writing, New York: Cambridge University Press.
- Woodward, T. (2001).Planning Lessons and Courses: Designing Sequences of Work for the
- Language Classroom, New York: Cambridge University Press.

Pedagogy of Persian
परसियन का शिक्षणशास्त्र

Unit-1 Nature, Scope and Aims

- Language- its meaning and functions. The role of mother-tongue in the education of a child.
- Special features of Persian language and its universal significance- the cultural, practical, literary and linguistic.
- Aims and objectives of Teaching Persian as a foreign language.
- The principles of the development of curriculum with special reference to Persian.
- The place of Persian in school curriculum with special reference to B.S.E.B.
- Development of Persian language in India with special focus on Bihar

Unit-2 Understanding pedagogy of Persian

- General principles of language teaching with special reference to Persian as mother-tongue.
- Problems of teaching the mother-tongue.
- Salient features of a good text-book in Persian, Comparative Analysis of prescribed text-books of different Boards
- Making Learning Plan for Persian: Nature and structure
- Skills of Teaching: basic skills, Core skills and planning micro-lessons for their development.
- Translation and Direct method for teaching Persian: advantages, limitations and comparison
- Teaching Aids: Blackboard, Picture, Chart and Map, Models, Flash cards, Puppets, Magnetic board, Radio, Tape-recorder, Television, Video, Overhead projector, LCD projector, Gramophone and lingua phone, Computer Assisted Persian language learning.
- Language laboratory and it's importance in the teaching of Persian Language.

Unit-3 Specific Instructional Strategies

- Teaching of Prose; Dastan-e-Kotah (Short Story), Hikayat (Story), Ruman (Novel), Tamseel (Drama), Tanqeed (Criticism), Sawanih (Biography) and KhudNavist (Autobiography), Major steps in the planning of a prose lesson.
- Teaching of Poetry-Hamd, Na't, Ghazal, Rubaee, Masnawi and Qaseedah; Objectives of poetry lesson. Importance of recitation, Major steps in a poetry plan.
- Teaching of Grammar: Place of grammar in the teaching of Persian, Inductive and Deductive methods and their relative merits.

Scanned with CamScanner

- Teaching of Reading: Attributes of good reading, Types of reading: Scanning, Skimming, Intensive reading, Extensive reading, Silent reading, reading aloud. Various methods of reading: The phonic method, alphabetical method, word method and sentence method.
- Teaching of vocabulary - Its ways and means.
- Teaching of writing and composition: Letter writing, Essay writing and Precis writing.
- Other literary activities in Persian: Elegant writing, Baitbazi, Mushaira etc.

Unit-4 Evaluation Techniques

- Concept and types of Evaluation.
- Concept and Components of Continuous Comprehensive Evaluation (CCE).
- Characteristics of a good test.
- Construction of achievement test in Persian with Essay type, Short answer type and Objective type items.
- Ways of testing reading, writing, speaking, grammar and vocabulary.
- Qualities of an Persian Teacher- an evaluative approach.

Suggested Readings:

- Ash'ari, Mohammad (1994). Teaching Persian by Persian. Tehran: Monir: Cultural Centre Publication.
- Avchinika, A. & A. MohammedZadeh (1996). Teaching Persian Language, Moscow: University of Moscow.
- Bachman, L. and A. Palmer (1996). Language Testing in Practice, New York: Oxford University Press.
- Baghcheban (Pirnazar), Samineh (1971). A Guide to Teach Persian to Non-Persian Speakers. Tehran: Ministry of Art and Culture.
- Baghcheban (Pirnazar), Samineh (1971). Persian for Non-Persian Speakers. Tehran: Ministry of Art and Culture.
- BananSadeghian, Jalil (1997). Persian for Non-Natives (Volume I) Tehran:Council for Promotion of Persian Language and Literature.
- BananSadeghian, Jalil (1998) Persian for Non-Natives (Volume II) Tehran: Council for Promotion of Persian Language and Literature.
- Brown, H. D. (2007). Principles of Language Learning and Teaching, 5th Edition, white Plain, New York: Pearson Education Inc.
- Larsen-Freeman, D. (2000). Techniques and Principles in Language Teaching, 2nd ed. New York: OxfordUniversity Press.
- Mirdehghan, Mahin-naz(2002). Teaching Persian to Native Speakers of Urdu,and Urdu to Native Speakers of Persian. Tehran: Alhoda International.
- Moshiri, Leila(1995). Colloquial Persian. London: Routledge.
- Rassi, Mohsen(2000). An Introduction to Persian. Tehran: Council forPromotion of Persian Language and Literature.

Scanned with CamScanner

- Richards, J. C. and T. S. Rodgers.(2001). Approaches and Methods in Language Teaching, 2nd ed. NewYork: Cambridge University Press.
- Rivers, W.M. (1968). Teaching Foreign Language skills, Chicago University Press.
- Samareh, Yadollah. (1993). Persian Language Teaching (AZFA: English Version) Elementary Course,Book 1-5. Tehran: Al-hoda Publisher and Distributors.
- Woodward, T. (2001).Planning Lessons and Courses: Designing Sequences of Work for the Language Classroom, New York: Cambridge University Press.
- Zarghamian, Mehdi. (1997).The Persian Language Training Course: Preliminary to Advanced, Volume-I& II, 1999 Vol. III, Tehran: Council for Promotion ofPersian Language and Literature.
- Zarghamian, Mehdi. 1999. Basic Vocabulary and Basic Grammar: TeachingPersian for Non-Native Speakers, Tehran: Council for Promotion of PersianLanguage and Literature.

Scanned with CamScanner